





धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार DH271

शी

ॐ नमः ४ श्री वक्र स त्वा य ॐ महावे
नमः ४ श्री महाय त्त सक्त वा य नमः ४
श्री माद्य सिद्धि य नमः ४ श्री सौं ग थ ग
या ध न म क सि त्त म य रु ग वा न
य व का या धि रु ग य वि ड ला व न

वा य ना य नमः ४ ॐ महा ग श्री या या
की महा ग मि ना रु य नमः ४ श्री म रु
ता या रु न स म्म क व द्वा य म च वं म
स व न थ ग न का य वा क चि रु रु द
जान मि ला यो न गी ला यो व द्वा य

१

म व य य मा न व ड ४ स मे वा धि स त्त म रु स त्त न ग थ थ म म य व ड न व ना म वा धि स त्त नमः ४
म त्त न का य व ड न व ना म x वा क व ड न व ना म x वि रु व ड न व ना म x स मा धि व ड न व ना म
x व ड य व ड न व ना म x य धि व ड न व ना म x म थ व ड न व ना म x ग ड व ड न व ना म x वा य
व ड न व ना म x का का ध व ड न व ना म x र य व ड न व ना म x स व व ड न व ना म x ग न व ड न
व ना म x व स व ड न व ना म x अ व व ड न व ना म x व न्म धी रु स वा व व ड न व ना म वा धि स त्त

नी

कचिद्वदसरावाकायध ॥ कचिद्वदसरावाकायध ॥ कचिद्वदसरावाकायध ॥ कचिद्वदसरावाकायध ॥
॥ संस्तिगामरुवन ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥

३

अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥
॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥ अथखल ॥

६

रुवनार्थमाय सर्वतथागतसुनातिस्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
कसुभागतः सर्वतथागतस्थपक्षदित्वास्त्रिनयादेयवहनामसमाधिसमाययदक्षेयकुलसमुपनमसानद्वय
स्वकायवाक्त्रिर्वहनातिस्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
विहिविद्यापुत्रवैश्वदेवास्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
सर्वतथागतकायवाक्त्रिर्वहनातिस्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतसमयसमुपनमसानद्वय

यथास्त्रिवायिकुलसमुपनमसानद्वयस्वकायवाक्त्रिर्वहनातिस्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
रुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्वहनातिस्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
तथागतकायवाक्त्रिर्वहनातिस्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
विहिविद्यापुत्रवैश्वदेवास्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व
विहिविद्यापुत्रवैश्वदेवास्त्रिवायिकुलसहाताः सैयकासयत्ति॥ अथरुगवानसर्वतथागतकायवाक्त्रिर्व

काकात्रयसर्वे तथागतकायवाकविरुद्धसद्विनिषीदया मासा ॥ अथरुगवा सर्वे तथागतसमागसमयसं कृत्व
 कनामसमाधिसमावशद वडनामकुसमकुयनमसा न ह दयं स्वकायवाकविरुद्धस्थानिष्ठात्रया मासा ॥ अथा
 त्रिक ॥ अथस्मिन्नाविगमागुस एव रुगवा सर्वे तथागतकायवाकविरुद्धविशेषपूयसा काव्यन महाविशेषियति महासुद ६
 सयोगयत्रमपदे ४ त्रिकसित ह काकात्रयसर्वे तथागतकायवाकविरुद्धस्थानिषीदया मासा ॥ अथरुगवा
 सर्वे तथागत ३ माद्यसमयसं कृत्व वडनामसमाधिसमावशद सनया कर्मध कुसमकुयनमसा सि ह दयं स्वकायवा

किरुद्धस्थानिष्ठात्रया मासा ॥ अथस्मिन्नाविगमागुस एव रुगवा सर्वे तथागतकायवाकविरुद्धविशेष
 न द्या ३ माद्यवडमहासुडा सयोगयत्रमपदे ४ त्रिकसित ह काकात्रयसर्वे तथागतकायवाकविरुद्धस्थानिषीद
 या मासा ॥ अथमाह तथागाविकामनि समयसुथा ॥ कुलाह न ह वै यथा काममा कुरुयता वका ॥ अथरुगवा सर्वे
 तथागत वडव ३ त्रिनागसमय वडनामसमाधिं समावशमां सव वडय जागु मरुषी स्वकायवा ॥ अथरुगवा सर्वे
 तथागतमासा ॥ अथमाह त्रिनागसमय वडनामसमाधिं समावशमां सव वडय जागु मरुषी स्वकायवा ॥ अथरुगवा सर्वे

वास्तुलादधिकारोऽपि निविद्यमानासन् अथ रुग्वा न्मन्वेतथागतान् नागधवज्ज्वा मसमाधिं समाययमां सर्वतथागतान्
यमहिषीस्वकायवाक्रिहवज्ज्वा निधाययामास ॥ मारुतनिः ॥ अथ सास्त्रिनिः ॥ रुमातायां स एव रुग्वा न्मन्वेतथाग
नकायवाक्रिहविशाय नृष ॥ ४ ॥ नृषधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमानास ॥ अथ रुग्वा न्मन्वेतथागतान् नागधवज्ज्वा न्मन्वेतथाग
नमसमाधिं समाययमां सर्वतथागतान् नागमहिषीस्वकायवाक्रिहवज्ज्वा निधाययामास ॥ नागनतिः ॥ अथ सास्त्रिनिः
नित्वा गमातायां स एव रुग्वा न्मन्वेतथागना कायवाक्रिहविशाय नृष ॥ ४ ॥ नृषधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमाना

स ॥ अथ रुग्वा न्मन्वेतथागतकायवाक्रिहविसम्पादनवज्ज्वा मसमाधिं समाययमां सर्वतथागतान् नागधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमानास ॥
यिस्वकायवाक्रिहवज्ज्वा निधाययामास ॥ वज्ज्वा नतिः ॥ अथ सास्त्रिनिः ॥ रुमातायां स एव रुग्वा न्मन्वेतथागतकायव
क्रिहविशाय नृष ॥ ४ ॥ नृषधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमानास ॥ सर्वतथागतान् नागमहिषीस्वकायवाक्रिहवज्ज्वा निधाययामास ॥
विशाय नतिः ॥ वज्ज्वा मसमाधिं समाययमां सर्वतथागतान् नागधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमानास ॥ नागधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमानास ॥
॥ अथ रुग्वा न्मन्वेतथागतकायवाक्रिहविसम्पादनवज्ज्वा मसमाधिं समाययमां सर्वतथागतान् नागधवारुत्वायुर्वेकोऽपि निविद्यमानास ॥

५०

रु न्या को भा का व न सं या क ॐ द म दान म दान यामा मः ॥ अ द्वा दि म म क रु द स्य का य वा क्रि रु व डि
न ॥ अ नु ल्या द य या ग व ड ल्या दाय न्य गो य न ॥ अ थ रु ग वा न स द्धे न थ ग न का य वा क्रि रु व ड रु क थ
ग न ॥ स द्धे न थ ग ना रि से वा धि न य व ड न म स मा धि स मा य द दं वा धि वि रु स द्वा ड हा व ॥ अ थ रु
वि हा व ना ला वा ला व ना न व ला व ना ॥ ॐ नि रा धा न रा वा ॥ स्या ला व ना ना य च स न ॥ ॐ ल्या ह रु
ग वा न स द्धे न थ ग न का य वा क्रि रु व ड रु क थ ग न ॥ अ थ रु ग वा न स च न व ड न थ ग न ॥

१०

स द्धे न थ ग ना रि स म य व ड न म स मा धि स मा य द दं वा धि वि रु स द्वा ड हा व स द्धे ना व वि
ग न न्द्र न्द्र थ ल्या य न न ग ह क वा डि न ॥ ध म ने वा न्म स म न यान्म चि रु स द्वा ड न ल्य न्द्र म न्द्र ना व
रा वा ॥ ॐ ल्या ह रु ग वा न स च न व ड न थ ग न ॥ अ थ रु ग वा न स्या ला व व ड न थ ग न ॥ स द्धे न थ
ग ना क य व ड न म स मा धि स मा य द दं वा धि वि रु स द्वा ड हा व ॥ अ न्द्र ल्या न्द्र म स वा न ध म न
च ध म ना ॥ अ का ग मि व न वा ना ल्या मि दं वा धि न य द रं ॥ ॐ ल्या ह रु ग वा न स्या ला व व ड रु क थ ग न ॥

ॐ

अथरुगवानचलककुवडसुथागनसर्वनथागननेवात्मावडनामसमाधिसमायशदंवा
धिविरुसदाडाहाच॥बरावाःसर्वधमविधमनकनवडिनाःधर्मनेवात्मासंरुना००दंवाधिन
यंदरुं॥००त्यादरुगवानचलककुवडसुथागन०॥अथरुगवानश्मिनाथवडसुथागनः॥सर्वनथा ११
गमहानावियदीयवडनामसमाधिसमायशदंवाधिविरुसदाडाहाच॥अथरुगवानश्मिनाथवडसुथागनः॥सर्व
नवरावना॥काशवदयागननिरुवः००यगीयन॥००त्यादरुगवानश्मिनाथवडसुथागनः॥००

अथरुगवानश्माद्यमिद्वीवडसुथागनः॥सर्वनथागनारिरुवनवडनामसमाधिसमायशदंवाधिवि
रुसदाडाहाच॥अथरुगवानश्माद्यमिद्वीवडसुथागनः॥सर्वनथागनारिरुवनवडनामसमाधिसमायशदंवाधिवि
रुसदाडाहाच॥००त्यादरुगवानश्माद्यमिद्वीवडसुथागनः॥अथरुगवानश्मिनाथवडसुथागनः॥सर्व
नथागनकायवाकिरुगुदुधमनलाकनातिशुत्वा॥अथरुगवानश्मिनाथवडसुथागनः॥सर्व
नथागनकायवाकिरुगुदुधमनलाकनातिशुत्वा॥अथरुगवानश्मिनाथवडसुथागनः॥सर्व

महाकालागाना संका नस्तु धितं ॥ जां वृन्दपुलक नं वृक्षमयस माद्रुलं ॥ नवतुलं महावजं पा नो नस्तु विलावम ॥ म नवक न
 पुलाका नं वज्रहा ला विलु धितं ॥ लामु नं विला विला काला मयस म ननः ॥ वम नग पु लाका वंदी म नागध नं पु लो यम हलं
 महाकाल लवयडाग व र्जिं ॥ वंस नस्मि पुलाका नं विधम मय वजि ॥ त्वम हलं वसो मय वय इह म पु लो ॥ अथरु
 गवा न्काय वाजि रु वज रु भाग न ॥

१३

पर

धर्म धा नु सखा ववजु नास समा विंस मा यय कं काय वा ॥ कुरु धि काने मं नु मदाज हा न ॥ हं धर्म वा नु वजु सखा वा
 ला कार्द ॥ वं वव नु मदा वलं स र्धम लमा नकं ॥ नासिका गुयय लन सा वया आ गन सा दा सि वं रु स्या नया ड
 लम सि वने वरु नय न ॥ म्पू वय लु न्य वने नो वद द्वा ला स मय रु शय क वजु मदा वलं ॥ यम का वव ला वु धे ॥
 वा धि मल मदा मये ॥ म्पू म्पू वय न्मा न ला कं ॥ आ का स धा नु मय म्पू वजु म लु लमा लिख नु ॥ स्वप्न म लु लम म्पू
 रु ला वय म्पू क म लु लं वय म लु लमं का लं ला वय रु वला वने ॥ वल म लु लं मं का न ला वय रु लं न लय न शया गन

स्यथन॥ न ह्यसंस्तुतं चकनालि॥ स्वल्पमिषु लं॥ मृदा न्या संतुः कया विधिदृष्टि न कर्मना॥ न ह्यमाख्य लिख क उ
 मिदु नील समपु लं॥ पंसा नृत्नमहाका लं रुचत्या विरय क नं॥ पूर्वमवमहा चंद्रव ग का ला विहृषितं॥ दक्षिणे नमहा
 रत्नं रुहितांगहना क ला॥ यश्चि नमहा व प्रपद्य नाग समपु लं॥ उत्तरमहा व प्र न सिद्धा ला क ला लिख न॥ पूर्वका (१)

१५

लाकु चं लिख न॥ यद्ये का ल लिख वृत्तमय सध समवरु॥ दक्षि लनन कथा वर्क सामा कि क ल स रं मृवं॥ यरु॥
 याश्चि मना लिख र म म क ल वि क लं चाल नं॥ इरु न ला ख लं क या नी ला रु मि व शा र नं॥ अ लिखे र्द्वि दान
 नम इ रं का ल म य रं॥ दक्षि लन लिख दृ ल म्ब ड का ला दि स य रं॥ यश्चि मना लिख ल्य मं र व ड का ला य रा क रं
 ॥ यौ॥ इरु न ला लिख दृ ड म्ब ड क ल वि व डि ल ४ य विं श द या वि ह्ना य न लु लं चि ल मृ ल मं॥ यू का क्का व य
 ल्ये न का य वा कि क य रं न ४ धा द सा दि का ४ या य या वि नं का नि स य रं॥ ग न्ध व र्ध व व ली क ला न स म धा रु

ॐ
५

कामयेनाममधिचकांवाजलामकिगुलमखलां॥सकवहवदंमोमजाकागथानुचंरुनं॥विद्युन
सकचकाकादिनदवगान्निविदाययन॥वर्वकुथकिमवृद्धावाधिमलोमदायगाः॥ ॥॥
वनथागनकायवाकिरुवहस्यागुहममाजसर्वनभागनमल्लनखुथ॥ ५ ॥अथरगवानाद्यः १६
नथागनकायवाकिरुवहवयायाकासविह्वुवनधनःसधमवयागवमाथाराधनीचयलक
न॥विकल्योथमरुनाचागाहधामाहाकलाःसाधयनियवनासिद्धिगयानाममनुरुवा॥चाछल

बलुकावाद्यामाननाधार्थविककाःसिध्यकद्वययानिशिमन्तदायानिद्वनरुवा॥जानकयवहन
यसमलामहायावहनाभवि॥नविमर्वनसिध्यकिमहायानागमाधन॥जावोर्यनिन्दनयवानेव
सिसिध्यकिमाधने॥यलानियाकिनःसलामवावादवनाचययवदवाशिवनानिखीकामनना
याविद्युनाहावहस्याथीरवाकुरुलमाधन॥माहरीगनियरीमुकामयद्यसमाधकः॥सिद्धि
नियलांगधनादायानागधमवा॥मानववृद्धस्यविराःकामयनयलियन॥सिध्यननस्यवृद्धल

कामगुले यो ब्रूजाद विं समा नर ना वल्लवमादि रिति संवृज यदा धिका कृया यं वा यदा वव जाग
 द वरा डा यय नमा ॥ कन्य कल्ल क ॥ श्री श्रुतौ द्वा नाना दत्ता शल कजा ॥ दशा दै सर्व व द्वा नो मिद य
 जीव माय मास क चत्त विदं कृणव विव क मिय नः दत्ता न्यादि दिन वा द्वा दाना विमिदिका १६
 य ॥ अ विव मिम दं स न ॥ धाय व द्वा न तुल मधु उः दत्ता न्य धम सा ग व द्वा नो वा ग व दि कौ ये नो ॥
 श्री का ग म पुन धी क र सा व य व र द म तु ला ॥ स विम्व न था ग न म य विव न वृज य पुन र या धि नि

मन्त्रा ज न मा न म श का य वा कि र्त्त सं शुद्ध आ का श म म ना ल य श्रुति वि का च नि वा रा सं वृज का य न मा न मः
 का य वा कि र्त्त सं शुद्ध जौ आ का श म म ना ल य श्रुति वि का च नि वा रा सं वृज का य न मा न म श्रुति र्त्त का
 था ग नं श कृ नि य थ व धै व व थ व र्त्त न वा ल च श म द्वा चि ल आ का थ न मा न म ॥ आ का य म र्त्त न श
 आ का ग वा क व र्त्त क श आ का श र ल ध म श्रु य व द न मा न म ॥ ॥ इति स व न था ग न का य
 वा कि र्त्त च द स्या द्वा द म मा ज म म क य यी य व र लः व च म श ॥ ३ ॥ अथ स ल का य व र्त्त था

ध
न

निवृत्तधनः अथ गवा सर्वे तथा गन कायवाक्चि लुगवत् ००० देसर्वे तथा गनमं कवदस्याः
मदाज्जहाव ॥ ६ सर्वे तथा गन कायवाक्चि लुवृत्तधनवात्स कां ॥ मनु निधायि कायनवात्स
नसिवादिनः समावयत्त व वासिद्धि नम ००० गवा वियौ ॥ चिरु के निधायि ने वात्स वात्स कायविला २०
वमनिधायि दयनि संया गमा का ००० समान य ॥ कायवाक्चि लुनिधायि ००० गवा वात्स वात्स कायविला ॥ मनु
मनिधायि गवा ववात्त विरावना ॥ विवाय देसमान कायवाक्चि लु लु नीरावयदि धिसंया गमा

माधि मनु काल्ये ॥ अथ वृत्तधनः ००० गवा ववात्त विरावना ॥ विवाय देसमान कायवाक्चि लु लु नीरावयदि धिसंया गमा
॥ आ का गवा ववात्त विरावना ॥ विवाय देसमान कायवाक्चि लु लु नीरावयदि धिसंया गमा
चिरु के वयमववात्त विरावना ॥ विवाय देसमान कायवाक्चि लु लु नीरावयदि धिसंया गमा
वृत्तधनमिवा विलायद कस्या यविल्यमन ॥ ६ ॥ आ का गवा ववात्त विरावना ॥ विवाय देसमान कायवाक्चि लु लु नीरावयदि धिसंया गमा
वमया गवा ववात्त विरावना ॥ आ का गवा ववात्त विरावना ॥ विवाय देसमान कायवाक्चि लु लु नीरावयदि धिसंया गमा

थ
५

गवजिनी॥ आकाशधाम मध्यस्थं तावदस्मिन्कुलं॥ मरुद्द्वयदमौम्यम्यविवावंविजेवनानीला
त्यतदलाकालं यश्च लविशवत्॥ यवमानं यथैतन्नैवामिकाग्रविचित्रयत्॥ चक्षुःकाक्षिप्रमासं
अकथयन्मकेशं॥ नासिकाग्रं हृदयं शिरसावयन्॥ अक्रादिना विज्ञेयं गतावनाकम् २१
कल्पयन्॥ सिद्धयथा धियदं बभूवसर्वसिद्धिगुणालयं॥ मरुद्गलनमनामनवद्वन्वाधियानिदिना
ननिष्ठावयदमवदकायवाक्शिरुलकिं॥ अथ वरुधवः शोभासर्वतत्त्वाथदशकः सर्वव्यापः

संवदनाशयनगुह्यमूलं॥ यमासानुगावयत्याह्लादयत्तद्वचसाचिनः॥ गुह्यं न लभ्यते हावकां संवदुं यविनावय
नाविप्रताहावकस्य थं कुर्यात्सिद्धिरुत्ताधिनः॥ सिद्धं न हनूत्तं न लब्धं वाधियिलमनावितं॥ मांसावकस्य थम
होमानां प्रकल्पयन्॥ सिद्धं न कायवाक्शिरुलं बहस्यं सर्वसिद्धिषु॥ हस्तिनामोदयमानं स्थानमा नूनं धारुमी॥
रुद्रयदाहावकस्य थवचो ननु विरुक्थम्॥ विद्यारुवागवद्वानां वाधिसत्त्वाधिसत्तापः॥ अननखत्तया ग
नलवद्वत्त्वमायुषान्॥ कामधार्म्यं त्वयि वा ताकशरुवत्यदकमेकम्॥ नृदसी बलवानाश्वः॥ कान्तिवान्नाय

यद्वेगनः धनमानयादिसंस्तारैः शंदनने तथा दिनः ॥ ७० ॥ दन नववृद्धानां नदस्य वाधिमुक्तसः ॥ मकुशु दमिदनुत्वं
 कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ॥ ७१ ॥ स्वसर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ७२ ॥ स्वसर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ७३ ॥
 दानवदलः यद्वेगः ॥ ७४ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ७५ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ७६ ॥
 वाधिवदलः यद्वेगः ॥ ७७ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ७८ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ७९ ॥
 यागानां नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८० ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८१ ॥

यमेकीवेः सवमानानामिति सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८२ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८३ ॥
 नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८४ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८५ ॥
 नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८६ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८७ ॥
 नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८८ ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ८९ ॥
 नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ९० ॥ नृपरागवानां सर्वेनथाग कायवाक्किं ललदिनमिति ॥ ९१ ॥

थ
का

त्यजनात्मकः स न वंरु गवानि (ग्यावद्धो वेवा च न वरुः) सकं ए विधं विद्वा यद वना नां निवदयन् ॥ स
न वरु गवान् विवक्षा वृद्ध वक्षा क न वरुः ॥ गन्धाम्ना वं ए विध वद्धा दि नो निवदयन् ॥ स ए वरु गवान्
विष्णो वा गधमधय वरुः ॥ न संस्तु धा तु वि विध वद वना नां निवदयन् ॥ स ए वंरु ग वी त्वन्ना वद्धा यज
माद्य वद्धि वाना ॥ स संस्तु धा तु वि विधं स्व कलस्य निवदयन् ॥ स ए वंरु गवान् वादी ॥ अक्राया का व
ला रिनः ॥ न येन दृष्ट सा दिनां सदा चि ल नि या डयन् ॥ पुं दे न स्म वं वृक्षानां गुह्य सा च समुद्रयं स व

२३

१३

रावनात्मकः स न वरु गवानि ॥ ३

दादिरुः स मी द वना रा वयन सं सदा ॥ अधरै वा रा वय ल व कल रु द विरा वनेः ॥ वृक्षान् स्म दि सं यो
ग न य म्ना न स्म नि रा विरा वना ॥ रा वना काय वा कि ल व दान् स्म दि रा वना ॥ कृ तान् स्म नि या ना न क्रो धा
न स्म नि या ना न रा वय न वा धि वा य्र या न ॥ सा व र्वा कि कां या य्र वा धि ना न व स य र्वा ॥ य द् न व वा न रु त्य डाम
धि वान व द स्म नि ॥ न था ग नि म द्वा रा वा ला च ना वा धि रा वय न ॥ द्वि द्रिय समा व र्वा वृद्ध सि द्वि म वा
व्र या न ॥ द्वा का का वा का व र्वा य का व र्वा वि क ल्य य न ॥ व र्वा न मि न मा कि ल्म स्य व र्वा व र्वा व य न ॥ न व

थ
५

वदुसामिवसुद्धा लोरावयनामनामना॥ वद्वानसुनियानादिनरावयनवाधिवद्विषः॥ ननु कथं
वद्वानसुनिरावना॥ सुगलिद्वयानिकाव्यवद्वविम्विरावयन॥ नमकेप्राविवववद्वमद्यासु
नवद्वशगद्वकथंधसमानसुनिरावना॥ सुगलिद्वयानिकाव्यवद्वधसमाविम्विरावयनभामकवायः १४
विवधधर्ममद्यासुवद्वः॥ ननु कथंवद्वानसुनिरावना॥ सुगलिद्वयानिकाव्यवद्वमद्यविरा
वयन॥ नमकवायविवधवद्वमद्यासुवद्वधमद्यकथंकुलानसुनिरावना॥ सुगलिगलिग

यनियेसायावद्वविम्विरावयन॥ नमकवायविवधवद्वलमद्यासुवद्वः॥ ननु कथंकाधानसुनिरा
वाना॥ सुगलिद्वयानिकाव्यवद्वधमद्यासुवद्वः॥ ननु कथंकाधानसुनिरा
थंसनयानसुनिरावना॥ सुवद्ववद्वमद्यल्लयवयागद्वधमद्यासुवद्वः॥ ननु क
ऊयन॥ ननु कथंमल्लानसुनिरावना॥ सुवद्ववद्वमद्यल्लयवयागद्वधमद्यासुवद्वः॥ ननु क
मीमल्लानकावान॥ ननु कथंकायानसुनिरावना॥ यकायमद्यवद्वलानसुनिरावना॥ सुवद्ववद्वमद्यल्लयवयागद्वधमद्यासुवद्वः॥ ननु क

थ
ग

वृद्धकायस्य सावनमभवि नादृशं रुवन ॥ गुरुकथं वागानुस्म निशावना ॥ यदववृद्धधर्मस्य वायानि
किं सम्यदः संसाविनादृशी वाचारं वृद्धमधवावसा ॥ गुरुकथं विला नस्म निशावना ॥ यद्विलं सम
गुरुलस्य गुरुकलस्य धीमनुः समा यिनादृशी विलं रुववृद्धधवायसा ॥ गुरुकथं तत्त्वा नस्म निशावना ॥ २७
यद्विलं सर्वसत्त्वा नाकायवाकि लो न किं ॥ मसावि नादृशं विलं जा का गमस सा चि ते ॥ गुरुकथं सर्व
मकुमरिकायवाकि लो कौ नस्म निशावना ॥ यत्कायमनु वृद्धस्य वाया कार्यविशा वयं मसा यिनादृशी विलं ॥ १८

रामकुधवायसा ॥ गुरुकथं समया नस्म निशावना ॥ समाया न्त्वा यादृशी नु विवता यिव त्या लो का किं न नासा
वयला था न नु रुहे मगन यां मिहि मा ध्या न ॥ गुरुकथं वृद्धो वायामि ता समया नस्म निशावना ॥ यद्वि नि
यतास्म वास वेअन ल्य ज्ञानि वास या न या धिना रि स या न वा नु न व स रु व ॥ गुरुकथं मनु ल्या वा न स्म नि
शावना ॥ यद्वि नियतास्म वं स व निम लं निप क रं ॥ न द य ता द यं ॥ नु रु व स दृ श स निम लं ॥ गुरुकथं
वृद्ध ला दि वृ ज्ञा न स्म निशावना ॥ दा रु भा दि को वा का या वि रा वे कि न रु व म सा क त य था ग ॥ य रु द न

लं वृजयदाधिका कया वं चाय हाव वजा गद वडा डावय नदा कय वल्लक ॥ नी छत्रा नाना न्या अल कृ ना ॥ दया
 हस व वजा ना सिद्धय रणी वसा स क न ह वि दे कृ न य वि व कृ त्वि व कृ न ॥ दया त्व नि दि न वा ह्री दा ना श्री मि
 दि काय ॥ ज वि य नि म उं स ना धाय व द म ल म ध उ ॥ द या स थ म या ग व द ना ना वा ग व दि ना ॥ श्री २८
 का ग ध उ म धी रु रा वे य य रु म ल ॥ स वि न था ग म स य वि द्धु न व द म उ व या धि की र्ण म् ॥

२८

६५

माय म उ ना या क व कां म शा रु ना ॥ ज वि द्धु न य दं क्ता ह्य न ल व जा व क ल्या ग जा गु द्धु गु क मि
 शा ला क्ता रु द्धु थ रु व दि ग नि ॥ रु द्धु क श व म ना भी का य वा कि रु य रु वं ॥ मं द मि दि य च
 या के व रु स ह्य न व डि व मि नि ॥ ॥ रु नि स र्वे न था ग न का य वा कि रु व रु स गु द्धु स मा रु
 वि स व स म य रु ता रु म ॥ २ ॥ अ थ व रु व यी वा जा स वी का ग म हा क व रु वी रु व क व
 या य रु स र्व वि रु व व म रु व ग का य वा कि रु स था ग नि व जा रु य म रु ल ॥ था व व रु म द स व रु रु

निनाञ्ज का श्रध्वागुम ध्वस्तु सावयव द्धम लु ले ॥ अक्रा ल्यवज्जु य सावित्वाया निवजं विरावय
 ने ॥ एलिङ्ग ग रुन को कं यं च न मि वयु निनं ॥ वद्वस्यव धरु ना ध्वा ल्यवज्जु य वरु यन ॥
 कोयवा किं लु स रोग न वरु मरु वरु निनं सावय ल्यवम ध्वा ने विरु सि हि स म व र ॥ अ न
 न यु द्ध वरु न स व स ल्वा वि शा क थ न ॥ य थ न स वरु स्य व द्वा क व डि नी न सा वरु वरु ल न
 ल स मा था यं ह व स र्वा क ला न्न वा ॥ अ थ वरु ध यो ना जा ह न मा क व सा ध क धा स्य सा वरु द्ध

२२

२२

निलववाधि ययाववर्क कं शाव उम मय र्वा वरु वरु वा धिय सा धर्क ॥ अ का श्रध्वागुम ध्वस्तु साव
 य वरु म लु न ॥ वै वा च न विरा वि ल्वा स व व द्वा वि रा व थ न ॥ स व व ल्वा य थ न व वरु वि मा न व क
 ल्य थ न ॥ रु व रं स व द्वा लो नि वरु स वि रा व थ न ॥ र व नि वि ना म गि स मा ड था द वि व य वि ना ॥
 रु व सा ॥ स व व द्वा नी ना रु व नि स नि यं रु व ॥ मा रु कु ल न ल स म था यं ह य स वरु लान्न य ॥ अ थ वरु
 ध यो ना ना न मा क व सा ध क ग गु द्ध गु द्ध नि ना ल स ड धा व स य नि म लु ले ॥ अ का श्रध्वागुम ध्व

हं रावयत्यमम ॥ लं ॥ अमिनाययरावित्वावद्वेष्टासर्वययनयन ॥ याविनाकावसंथागं सर्वयानन
 रावयन ॥ यनु ॥ समयथागन ॥ दं मजनथाकमाद ॥ यैदियेययागधमवाक्तानयउजयन
 ॥ दं नुसर्ववद्वाना नि काया रुयराववं ॥ वागकुलेन न्यममयायं रावनीयमुमानि शानि ३०
 जथवजधवा वाजावजमना थमाधकः शानसंरुननेवात्स्य ॥ दं मवनमवविना ॥ आका
 शं धाकुसधसं रावयवद्वम ॥ लं ॥ वजामाद्ययरावित्वासर्ववद्वामुसावयन ॥ मिखावा

दंगजयदः सर्वाभिमाभिरावयन ॥ विसम्यादयङ्गी नानावाकथासर्वदिनालयान ॥ दं नुसर्व
 वद्वानाग्वागाका शं सानिमलं ॥ मनेसिद्धि कर्वायाकु वद्वयज्ञानवद्विना ॥ समयाकु वनं कुव
 नत्वसमयायं यव लीयं यथापेनः ॥ जथवजधवा वाजा निवजाराद्यो जनायय ॥ सिद्धि वजय ॥
 नाव ॥ दं न्यवनमववीन ॥ आकाश धाकुसधसं रावयनममथम ॥ लं ॥ विसककु ॥ यरावित्वासर्वव
 यविदं स्थावनं ॥ जौ ॥ याकव्यववनाद्ये नुमुसवयन ॥ हानमायूयात् ॥ ॥ दं रुगवान्मर्वनथागन

वज्रवक्रः जथयलसर्वेनथागनमसयवज्रककुवमस्याकुमहावाधिसत्वाजाधयवायाजरुन
 याकाः देवाकथवज्रधायसकार्यः किमयंरुगवानावेनथागनाधिवेतिः नैधकुकुचनवक्रोस
 वेलाकथाकुयनिनिनुनवेनथागनमसर्ववाधिसत्ववेवेनाधजरुनवाकथवज्रयेदंसावगुसा
 जथलगवक्रः सर्वेनथागनास्मावशिलाया नरिवायावज्रककुसमन्यवमालुवज्रः समानमसर्वेनथा
 गनमसयवज्रककुवमस्याकुमहावाधिसत्वा नवमादः माकलयेदंमादीनसंज्ञाजगुमिन

३१

२१

संज्ञायाद्यादयथा नकस्माद्वानवग्रयया कलवजायद्वनवाधिसत्वयया कलवजायद्वनमंगवया
 नयथायिनामकलवजा आकाशमवतानगने जाकाशानगना निसर्वधत्ता निच कामधाकुली
 नानिनाक्रयधाकुलिना नि॥ नवगुसहा रुनकिना नि॥ नवभवकलवजाः समवधर्मा अनगन
 व्या॥ इदमर्थविज्ञायनथागनाः समवसत्वा नामाशयं विज्ञाययना धर्मा नगयनि॥ नवभवकल
 वजा आकाशधाकुवद निरुक्तानि नवगेनथागनासमयान्गकुवाशनय धायिनामकलवजा

श्रीः कालः श्रीमथनीयं च वनवदन्तु व्यायामः व्यायामी त्वधमः श्रुवा इति वणि॥ जगिमतु वल्लयनेम
यान्तिनवका लुक्किगानमधनीयन्ति गानयुक् वस्य व्यायामः किन्तुः नवभव कलवनाः श्रुवन्तु थग
नवजुमसयाः श्रुवन्तु वदन्तुः जगनागमनायेति वणि॥ जगन्मस्य वाधिसन्ता आर्ययाका अरुणया
का विष्णुया लुक्किगानमधनीयन्ति गानयुक् वस्य व्यायामः किन्तुः नवभव कलवनाः श्रुवन्तु थग
कल्येन श्रुवन्तु वदन्तुः जगनागमनायेति वणि॥ जगन्मस्य वाधिसन्ता आर्ययाका अरुणया

मां कृपयन्मा धमदन्त्वा धमसमयं न वसं ॥ ८ ॥ जय रूगवन्ः सर्वे न भगवन्ः यन्मां कृपयन्मा
गवन्महासमयवज्रं नत्वा शिखं वाचिकाय वा किं रूगुद्रं न भगवन् नमो वसाहः ॥ सावमरगव
मं त्वं मनुसा वसमवयं ॥ काय वा किं रूगुद्रं धमसमिद्धि न या रूमसिद्धि ॥ जय वज्र धम वाजास व
रुं ॥ न वयं रुद्रं दकः वल्लु विष्णु लाकः ॥ रुद्रं वचनमय विष्णु ॥ काय वा किं रूवज्रा नां काय वा किं रूसा व
नं निवि कल्योनि नाम्मसमना नक्त चिन्तिनं ॥ जय रूगवान् सर्वसाव रुद्रं रूगुद्रं भगवन्ः या नमि नामं न

नयवज्जनाममसाधिसमाययनः ॥ वं ज्वसर्वेनथागमानवमादः ॥ अस्मि रगवकः ॥ सर्वेनथागना ॥ अज्ज
स्ययमसासुथागनाजनकोविद्याकाठिनियवमनमदसेः ॥ सत्ताचोयानि क्रियाताठकंदगयमि
दंशदिगलोकधावुवयवसानयसर्वेलाकधकनुव ॥ चंचकामगुलेः ॥ कीदृक्चिबमकयदिवालयक ॥ ३३
॥ नवकुसकुवयाशियकुमवलाकयनिठकस्यद्वानिब्यन्तावनायेनथागदमकुवयावराधम
नवमवांसदावकवालीववलाकनाथमिदंसर्वेनथागनकायवाक्किरुमकुवजनहस्यंसर्वमक ॥ ३४

द्वदयसंवादननाममहावनमगुदंसर्वेनथागनकायवाक्किरुसमयावतंवनेसर्ववज्जधवाकायवाकि
रुसमयावलननं ॥ सर्वधम्मधनकायवाक्किरुसमयावतानंस्वलोकायवाक्किरुवज्जथावाक्थवदनि
कत्ता ॥ ३५ ॥ दंसकुममचयमदाजहावा ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥ अथास्मि काचिदमायसर्ववज्जः ॥ सदवमा ॥ कंयि
नामरुमात्यदः ॥ वज्जसत्तमवसावन ॥ अथुवज्जयाति ॥ सर्वेनथागनाधियनिविमसमयमदाजहावा
जाकाशकनुमथीरुतावयकुरुमकुरु ॥ ३७ ॥ कावनकुसध्मसंस्वविन्नेनयकल्पयन् ॥ वज्जवाधिसहा

दिक् विष्णु वक्र विवि लयन ॥ वक्र नां कायदा क्रि लं द्रु दन न वि शव यन ॥ सरु व रु ल्क ना द व का य व
क्रि ल व ड ध क ॥ व ड स लो म हा ना डा सर्वा ग ॥ य व म श्व व ॥ म ल लं स मे नु म नि श्रा द न वि धि रु व
न ॥ ४० दं न म द्र व द्वा नां स्य व म ड ॥ म य यं ॥ स म न य व वं ध्या ला व रु ॥ म न य व रु य न ॥ नि म र वा का व य ॥ ३४
मे न नि व रु ना वि शव य न ॥ ४० त्या दं र ग वा न व ड म म य ॥ न न द म व म व ड व रु ल्य ॥ द्रु द य म ध्य ग न
स म म रु ना ना वि शव न ॥ न स्य म ध्य ग न ॥ वि रु द क ल म्य व म य दं ॥ यं व रु ल म हा व ड ना व य श ग न

सदा विनयनी लीव जां क शव रुदन धृदयं नादयं नद वनो वाय वादय न् ॥ ७० ॥ द न न व व जा नं क द वा धि
यमा धने ॥ चक्र वम क लाये स व जां क शदि सा वनं वाद न द द य वा क सि द ना ठ क सं र वा स का रुं या व क
वि न ७० द व ज न या रु सं ॥ सि ध्य न का य वा कि रु न रु सं ह्री न व जि ना ॥ वा व वा क य लि व व दा रि सा सा ना
स मान सा ७० द द कि वि व लां सि धिं न न ॥ सा ना व ल यि यी ॥ व द्वा न्य वा धि स ला ध्यं म नु व यी ग सा ध का ॥ अ न्दि क
म श्वा दि मा हा न द नु स्य जी वि न ॥ अ थ व ज ध वा वा जा नि ला का ना न् न स क ॥ नि ला क व व व जा गं ७० द द वा

यत्तमकाविना॥ यावन्नामकवन्वाक्किवज्जहानावविनाः दयडिययथागसर्वसावाविकत्यंनं॥ १०० दं
 कसर्ववज्ञानीमनुसमयसावनां विश्वशरीयविकववज्जसथागवावनवकावककृत्वामोक्रुदिदसमय
 मल्लत्वं॥ अथवज्जववाजासर्वदथागनात्तज्जसर्वारिथकवृद्धाग्रुदं ववनमयविकलाकधातुवसर्वव
 यावन्वायाधिनःस्तनाः महासडावयागसर्वसात्तज्जवज्जुअयन्॥ स्मयददवदं ननजसंखकाटिवज्जिभा
 १०० स्मरुगवान्वाधिसमयजननयायूयादाधिवज्जकाकागसकिनासरुवदज्जसत्वागवाधिविहाजिना॥ २५

दधिः॥ ॥ १०० स्मरुगवान्वाधिसमयजननयायूयादाधिवज्जकाकागसकिनासरुवदज्जसत्वागवाधिविहाजिना॥ २५
 गमः॥ वटलः॥ १००॥ अथरुगवान्वाधिसमयजननयायूयादाधिवज्जकाकागसकिनासरुवदज्जसत्वागवाधिविहाजिना॥ २५
 शास्त्ररुगवान्वाधिसमयजननयायूयादाधिवज्जकाकागसकिनासरुवदज्जसत्वागवाधिविहाजिना॥ २५
 गक्रनमकागमहासडाविसावनांककृत्वाहानवज्जसर्ववाधिसमावहं॥ इकावहानददयंकायवज्जसमा
 वहं॥ अः॥ काववाधिनैवात्मावाग्यज्जसमावहं॥ इकावकायवाक्किरुवज्जकागससमावहं॥ १०० स्मरुग

भवान्नवन्तथा गनकायवाक्कि रुमन्नुविशायन्वःखवज्जमध्यमनं॥ विरुन्नालुलंमव्ववज्जं॥ तं कावसा
वयरुन्नुवज्जमध्यमन्नुवदं॥ मरुदं हानवज्जद्वयं॥ ॐ ॥ वज्जमलुलमध्यमं तं कावन्नुवसावयनं॥ मरुदं
मध्यमं तं कालं कविचिन्तयेत्॥ धर्ममलुलमध्यमं तं कावन्नुवसावयनं॥ तं कावन्नालुलं मध्यमं
धर्मवज्जं तस्य लिखावन्नां॥ ॐ त्वाहं मगवान्नुद्वमयः द्वादयं श्रुत्वा वद्वयः कायवाक्कि रुवज्जं
तं काववज्जं काया श्रुत्वाः काववज्जं वाक्कायाः तं काववज्जं वाक्कायाः तं काववज्जं वाक्कायाः तं काववज्जं वाक्कायाः॥ ॐ दंन्नाधिनया रुमं॥

ॐ दं न न व द न न व द वा धि यु सा ध का नि मि नं ह न व द न व द ह वं द वा द यं ॥ अ न व व द व न वा म न
वि श नि कि लि ना ॥ नि धा द ना दि स म यं मि व जा रु थ रा व ने ॥ स व न थ ग न वि रु स म य न ल ह न ॥
व जा धि द न ह न न स स मा धि ॥ दि वि के व व व म च ॐ दं या ग स मा न र न नि ध न का य वा कि रं व न
क न न रं स य थ स व द न म ध्य ग नं वि रु न य स ॐ ल स रं मं ॥ नि धा द ल मं न स म यं ॥ ॐ का व द
य न्य मि न ॥ व व व मि स ह म द्या न्ने वा व ना ग रा व ने ॥ अ न न का य व द स व द व वा व ना द धि मि ध्य

निवक्रमावतवदकायसमयवनिवक्रकल्पनिधयः सवयनवहानिनो॥ ॐ ह्यारुंरुगवाकौ कायव
 डगुदुःसर्वनथागनकायवजनमिक्काहानामसमाधिः खवदुसध्वगनचिह्नधम्ममल्लमरुमं॥
 निध्याधम्मसकयकवसाः कावत्वाकथमन॥ वंस्थवल्सहावजं लाकव्यवगतावनेधनिध्याधम्म
 यज्ञानांवाक्कमययवचरकं॥ धर्मवाक्कथमगाक्काधूमवजसमारुवन्॥ निवक्रकल्पनिधयः सव
 यलं चक्रानिनो॥ ॐ ह्यारुंरुगवान्वावक्रगुदुःसर्वनथागनकायवजनमयसंरथा नामसमाधिः

३१

२१

सवजसध्वगनं विरुदुजसल्लमरुमं॥ निध्याधम्मसकयकवचं कंकायचिह्नसंस्मिन्नामहावजसमय
 नल्लमेचवलेविशवयन्॥ कल्लवाहानवजं नमस्ववजं जिनालयं॥ वजयिह्नसमः॥ सासर्वज्ञानय
 मादधिः निवक्रकल्पनिधयः सवयनवहानिनो॥ ॐ ह्यारुंरुगवान्वावक्रगुदुःसर्वनथागनकाय
 वाक्किरुसमयसंरुवदजानामसमाधिः सहावजं समाधायवजसल्लमध्वगनः सर्वकारं सर्वकायवय
 वजहानसमारुवन्॥ सर्वदुष्टं ध्यावाधिमलेस्वयकमा नामरुमरुः निध्वनि कल्पसमयं वदं नयिन

दृष्टमा ॥ ॐ ह्यारुं गवान्खवदसमसः कायवाक्किरुदो नमंरवक्क हमाति नामसमाधिः ॥ ध्यात्वात्मस
 कुपकृतं वदसमं लंमध्यगं दृढयदं कायवदस्यं कृत्वा वज्रविश्रावनां ॥ ६ ॥ संज्ञां समयसंज्ञां
 कायवाक्किरुवादि मधमस्य वदधिसत्वात्मादधरुमियुनिसि नः ॥ ध्याधिसत्त्वज्ञानसमयवदवदः ॥
 नामसमाधिः श्रवधालुमध्यगं ध्यात्वादी कालस्य वदं वनमाकावद कार्यनखवद कायसमाखवद ॥ श्री ॥
 खवदसमयकृद्वाननामसमाधिर्वी ॥ वद्वारिहागुमसमयः ॥ यवाशिहा समयाखवद ॥ ॐ दं नत्त वसिद्धि

३८

२८

नो वद्वारिहागुमाधवं ॥ खधालुमध्यगं विरुद्वसमं लंमरुमं ॥ वदसत्त्ववरावित्याहा नाकावयरा
 वयन ॥ ६ ॥ निवदसमय ॥ नन निवदा कायसमाखवद ॥ ॐ ह्यारुं गवान्कायवद ॥ अकायसमय
 कार्यवाक्किरुग्रधनिगः ॥ साकधालुवसर्ववृद्धनन कायवदिनः ॥ अकायसमय कायारिसंवाधिवदः
 नामसमाधिः श्रवधालुमध्यगं विरुद्वसमं लंमरुमं ॥ आकाशवदं वरावित्याह नाकावयरावयन ॥
 ६ ॥ निवदसमय ॥ नन निवद कनुसमाखवद ॥ ॐ ह्यारुं गवान्बलकं कुडं वदः ॥ कायवाक्किरुवद

गवत्सककुसमप्ररुःसरुववाधिनेवात्माहानगुहसमावयः। वत्सककुसमयसं सागवज्जानामसमाधिः।
 यधानकुसध्वगर्गं। विनवद्वमलुलमलुमी॥ लोकध्ववंपराविलोधमी कावंपरावयन॥ इति वज्रसम
 यध्याननष्टिवज्जामिगुसमारुवन्॥ १०॥ त्याहुरुगवानसिगवजः कायवाक्किरुवज्जलजोसनायूसमय
 रुधससवन्सर्वमत्वा तांमहायानयथादयः। अभिनगुधवज्रयरावधीनामसमाधिः। यधानकुसध्वग
 तविकुवज्जमलुलमलुमी॥ वज्जान्वयवंपराविलोसमया कावंपरावयन॥ इति वज्रसमय ध्याननष्टि

३९

३९

वज्जामारुवन्॥ १०॥ त्याहुरुगवान्माधवज्जः कायवाक्किरुवज्जलजोसनायूसमयः सरुवद्वानदधिः। श्रीमं
 सर्वसत्त्वाधमसुवः। जयसमयसंरुववमिहानागसं रुवानामसमाधिः। यधानकुसध्वगर्गं विद्वं गुरुवज्जमलु
 मलुमी॥ वेशावनवज्जयराविलोषिकावयरावयन॥ इति वज्रसमय ध्याननवेशावनवज्जसमारुव
 न॥ १०॥ त्याहुरुगवान्वेशावनवज्जः कायवाक्किरुवज्जलजोसनायूसमयः सरुवद्वानसंवाधिमि का
 यारुद्वसाधकः। कायवाक्किरुवल्लग्ननसध्वधिवहानामसमाधिः। यवर्गवविविक्तयनादवयव

व. श. व. र. ग. भा. ना. दि. व. वि. का. र्थ. मि. दं. ध्या. न. म. म. व. यं. ज. का. र्थ. ह्या. न. व. डा. दि. ध्या. त्वा. र. व. ड. म. ध्या. नः. प. श्च.
 रि. ह्नु. व. या. ह्नु. न. म. न. व. द्वा. ग. रा. व. ना. ॥ १० ॥ रा. ह्नु. र. ग. वा. ना. हा. व. डा. त. म. य. व. डा. रि. ह्नु. व. य. श्च. ग. लं. म. हा. व. डं.
 यं. व. डा. ला. वि. ह्नु. वि. नं. ॥ व. ध्या. का. न. व. या. ग. ल. य. श्च. रि. ह्नु. स. मा. रु. व. न्. ॥ स. म. क. का. व. य. च. क. म्. लि. ग. ४.
 ग. रु. ना. क्. लं. ॥ व. ध्या. व. ड. व. या. ग. ल. व. डा. रि. ह्नु. स. मा. रु. व. न्. ॥ रा. व. ड. म. ध्या. ग. रु. व. कं. व. ड. डा. ला. त. म. य.
 रं. ॥ ध्या. त्वा. व. ड. य. व. स. न. व. द्वा. ग. य. स. मा. रु. व. न्. ॥ व. ड. म. ल. त. म. ध्या. र्थ. ह्या. का. र्थ. वे. ना. च. नं. न्य. स. नं. ॥ ११ ॥

का लंद दय आ ला सर्व विहान राव ना विना वज गनं विरु य दान स्य व जाय न सरु व वि कामनी
 ॥ श्री मा ॥ सर्व व द्वा ग भाव क भव धम धु लम धरु वज आ र्यं प रा व य न ॥ क का रं द द यं धा ला
 विरु विरु ग नं न्य स न ॥ व द्वा न धु लम धरु वज आ र्यं प रा व य न ॥ आ का लं द द यं धा ला वज
 विरु ग नं न्य स न ॥ व द्वा न धु लम धरु वज आ र्यं प रा व य न ॥ नि धा य हानं ॥ व द्वा सिद्धि
 स मा व द्वा ॥ र व द्वा धा कुरु म धरु वज आ र्यं प रा व य न ॥ क लं का लं का य वा क्ति र्ग न धा ला क ल्य म

निष्पिनि॥ खवज धातुमधसं रावयनधर्मसु लं॥ आकाशं कायवाक्किं लब्धं लोकल्यं सति
क निधाय धातुमधसं रावयनधर्मसु लं॥ दे का लं कायवाक्किं लब्धं लोकल्यं सति क नि॥ आ
रुगवान् खवज क ल्यं ज्ञानं समयो शयत्यह नि विदया गं कायवाक्किं लब्धं न वं वि ना विनयः ४१
दायि वज्र धनीयमि र व न ॥ ८६ ॥ ३०॥ ॥ निसर्वेन धामन कायवाक्किं लब्धं न वं वि ना विनयः
ननमनु समयन ल व ज विद्यायू धातुमधसं ल ४१ का द ल म ४॥ ११ ॥ — ७ ॥ ७ ॥ — १

॥ १॥ अथ वडधनः ॥ आस्ताः ॥ मुखा ह्यनागसाधकः ॥ हवडसमयनत्वात्वा ग्वडंमदाउडा न
खडुल्यसमयासु ॥ निविकलत्वात्वा वडधनं नैव नाठकार्यं यत्वा नमदाठविषयदत्ता वरुल्यव्या
अनं कुन यवनि डि साधं सर्वसिद्धिसमच्चर्यं ॥ कायवाकि हवडयवंडावडयत्वा वना ॥ सुलनं
कायवाकि र्कसंशवडसम हवडयत्वा अनसगविसाधयत्वा दीकवडयत्वा गगनिसिद्धात्माः
सर्वी संकालं हविर्गवर्कवडादयादवानय ॥ निकदाचरनः ॥ मद्रुगीवडासमयाचुनं कंवी

नामसमाधिः॥विद्युत्प्रयःश्रुतसमर्थस्त्वडाकदसंरुवः।कुत्वाहृत्राहृमहिनामस्वयुलावधय
रुद्रंमवेवद्धानंविक्तुंनययुयुत॥सरुवैरुद्रंभद्रंमंडुवज्रसमःयुतः॥स्वमर्केभ्यु
लावित्वाचक्रंस्फालिजंमयुलाज्जालयंमवेवद्धानंभ्रत्वावृद्धसमीरुवज॥सर्पिंशान्यमः
नृसांयावन्तुःपत्रमानवयाचिनासुसारावयंरुविविष्टानिगुलालयाकेधनुकमहावडाह
वैवृत्तुनममरुतःरुवकिनास्यानूचनाःसर्ववडाधनायमाः।चक्रसमयानामसमाधिः॥स्वमर्थ

लम रु व डं ध्या त्वा म लु ल म ध्या रु ॥ आ ल र्यं सर्व व डं सां वि रु व डं समा रु व डं ॥ ध निं ग न्य
 म न्य सां या व रु य न मा स व ॥ या वि रु रु स्या वा न्या रु वि द्य नि रु सा ल य ॥ ति धा न क क म रु
 व डं वि रु न्य नु न म रु रु व डं स म गाना म म मा धि ॥ य मं स्य नं व डं स ध्या त्वा स्रु द ल म रु
 रु ॥ आ ल र्यं सर्व धि र्मां सर्व धि मा म मा रु व डं ॥ ध निं ग न्य म न्य सां या व रु ॥ स रु य य रि स द्या त्मा व रु
 व डं ग म लु ल य म स न ना न म स मा धि नि ध नि क ल्य म म र्यं स व र्य न्वा धा द्या नि ना य द्या दि

सर्वेष्वेव दानां प्रियुक्तं यद्गुणायकम् ॥ स्वमर्कं रावयुत्वं इयं श्रवणमि समयं यत्वा लो गृह विभक्तम्
कः ॥ एवञ्च विद्याधनो रवणे निवन्तु कर्मकाय उदयवसे दसमस्ते नः गिमादु ग्रेक म हा शुनं ॥ स
रवदु ह न गीरु मधुयद रि न व नि वि रू न कार्या वा व ॥ रुवा जे ॥ १४ द दानि ना दृ गी सिद्धि विम्वः
जुषरा विना ॥ सर्वस्वज्ञी क मा नाम स धि ॥ १५ ॥ कार्गु लि कां ध्या त्वा च न का मि यु मा ल न ॥ १६ ॥ म ध्य स्त
द व ना वि म्व स र्व वि चि ह्य वि रा व र ॥ १७ ॥ स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स म य र ॥ १८ ॥ उ दि रा दि र

६७

संका ॥ १९ ॥ जामु न द स म य र ॥ २० ॥ आ ॥ १ ॥ का लं गु लि कां ध्या त्वा च न का मि यु मा ल न ॥ २१ ॥ म ध्य स द व ना वि च
म वि चि न्य रा व र ॥ २२ ॥ स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स म य र ॥ २३ ॥ उ दि रा दि र संका ॥ २४ ॥ जामु न द स म य
र ॥ २५ ॥ का लं गु लि कां ध्या त्वा च न का मि यु मा ल न ॥ २६ ॥ म ध्य स द व ना वि चि न्य रा व र ॥ २७ ॥ स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु
स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु
स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु स र्वे लक्ष्मी द व वा धि वि रु

[illegible][illegible]

[illegible]

मास न स वेति द्विप्रसाधनः । अमास सप्तमया । अथ वजा कर्षणमूर्हम् । अत्र ता रुवसवे मासा तां ध्यात्वा सवे वि कल्पयन् । अथ न न
इत्यादि सवे वेद न विष्ठा न । अथ वजा न वनाय कर्षण वा कुरु वजिर्धम् । अथ दय हान सप्तमये म कटा वजा गुक्ष विर्लम् । अथ न सवे व द्वा नी मि द सप्त
मथ न यारु मी । कुरु वी सप्तमया । अथ सवे सिद्धि कर्षणम् । अथ सप्तमय हान वजा हाना नाम सप्तमाधिः । अथ द्वा गु सप्तमय वजा । अथ ध्यात्वा हान वजिर्धम्
यथैव सप्तमया । अथ रुवसवे वेद न वजा हाना नाम सप्तमाधिः । अथ द्वा गु सप्तमय वजा । अथ ध्यात्वा हान वजिर्धम्
मथ वजाम् । अथ पालिनी नाम सप्तमाधिः । अथ वजसप्तमय सिद्धि । अथ रुवसवे वेद न वजा हाना नाम सप्तमाधिः । अथ द्वा गु सप्तमय वजा । अथ ध्यात्वा हान वजिर्धम्

ऊत्तासाककार्तुसमकुगवकासमयसिधायद्वकायसमाखतुविचयनसमनेन॥सिद्धांगंभावालिकसर्वेण॥सवषूसमयाप्रवि
शाधयपुरुशवक्तृसत्रिसमयसिद्धायकायवज्रपुरावयण॥अन्तर्धानभूसवेष्टारुमुकावरासक॥द्वयस्तुनीतिद्विनांतुकंकनासन
गजागीगावालिकसमाब्दाकिंवजालर्यसहिमान॥यद्यंगंवद्रुवडांघान्द्रुमेकीयथामरी॥गंगावाल्कसमे॥१०॥यद्यद्वा॥संप्रतिको
रु॥१०॥चात्यलि॥कायेरु॥आगरुमीवसेवेष्ट॥गीगावाल्कसमे॥१०॥१०॥कायवाक्किरुलरुर्धांसर्वैकिसर्वसत्त्वानांविज्ञानंनारकाइवीगी
गावाल्कसमे॥१०॥कल्पे॥सीसानस्ति॥मिरुर्व॥यूर्वनिवाससमयदिमनुयमिवसांसवत्॥गीगावाल्कसमे॥१०॥कार्ये॥वृक्षमयाश्लीकमे॥

[illegible]

दाशान्तरिह्यवमकाशंनकुनस्वार्थसाधकमहाद्वेषविज्जलममरुत्तुवधनिनिगदतकृजेभूसदासिद्धिर्वायनं॥१॥
 वातमहासाधनवज्जुअथवज्जुतुक्किधरावाकायोदृढयने॥१॥विदज्जकायसमकुतसावधनसिद्धिमधुर्ग॥१॥
 नस्तेनयूवद्विमाना॥१॥कात्रवजनवाताम्ययमादिअतु॥दिनानिसफयकृकेमासमधार्द्धमवेय॥१॥
 दिव्रवायुम॥विसेनेधमया॥कुदिनरुदयवादनै॥यक्तास्य॥न॥ग॥सिद्धि॥वृकागुक्तायसैरावे॥न॥ग॥वसूयसाधनसत्त्वनवी
 पर्य॥वृद्धकायधन॥धामान्॥विदज्ज॥रुमसादिना॥१॥विद्वानपदमद्यकृवेनुकायवज्जि॥१॥दहादिक्कलिगावृद्धा॥१॥वज्ज

रुचराविताश्रुधिवानयदमयकुर्वन्नुकायलक्ष्मिर्गन्तुर्दसाधनस्यन्त्रविषयविषयोर्धवाकर्ष्यः ४४)मानुवजा
 रुचराविताश्रुधिवानयदमयकानुवाग्विजिगृहदहादिर्हस्तिनावृद्धाश्रुवजाश्रुयराविताश्रुधिवानयद
 मयकुर्वन्नुवाग्विजिगृहदहादिर्हस्तिनावृद्धाश्रुवजाश्रुयराविताश्रुधिवानयदकस्यकुर्वन्नुवा
 वृन्तुर्दमसाधनस्यन्त्रविषयविरुद्धवत्रक्षमाश्रुवजाश्रुयराविताश्रुधिवानयदमयकानुविरु
 द्जिगृहदहादिर्हस्तिनावृद्धाश्रुवजाश्रुयराविताश्रुधिवानयदमयकुर्वन्नुविरुद्धजिगृहदहादिर्ह

लवङ्गी शशाङ्गवाकाहानमरुसं वज्रमनु यत्ताने विनिर्दिष्टं यवज्जधनः प्राप्ताववज्रहानमरुवः कलशिका
 वरागावज्रजायमदारु नन ॥ सर्वसत्त्वावजायवनिवज्जालयनरु ॥ अद्वैतवज्रवयनं न्यायार्थविवज्ज
 उच्यते ॥ ॐ स्वाहंवाग्विभं स्फुरन् नकार्यकायवाक्किल सन्निधौ ॥ अननजायवज्रवनिवज्रविरुसमास ४९
 वन ॥ वज्रानाकायवाक्किल ध्यात्वावजायकल्पनं ॥ कलवज्रहानवज्रवनिवज्रविरुसामासुवन ॥ वज्रानाका
 यवाक्किल ध्यात्वावजायकल्पनं ॥ कलवज्रहानवज्रवनिवज्रविरुसामासुवन ॥ अथवास्फुरन् नकार्यकिल सन्निधौ

वदियति ॥ कायवाक्किलने वत्स्यहानचिरुनमंस्फुरन् ॥ उच्चातयनस्यावज्जानुमाकोसंदायमादि ॥
 ॐ दं नमवज्रानां हानानां विनवज्रवां ॥ कायवां जातिमं वाधिरावासावविवाव ॥ वज्रकाय ॐ गियाकुः
 कायजायः गडं युवा ॥ वानुमया रिमं वाधिप्रवद्वानविवान ॥ वागज ॐ गियाकावागजायः गड
 चाना ॥ चिरुसमयसंवाधिः स्फुरि वज्रविवान ॥ वज्रविरुसिगियाकुविरुजायः गडं युवा ॥ अथानुग
 मजायननिःस्फुरादनवाव ॥ विवावसंल्यववज्रस्थानवजायः गडं युवा ॥ म् न वं कायमं ॥ ॥ न

वृद्धकृत्वा नाम नृणां गमना गमनवशात् सायकजायः मडयन ॥ १४ ॥ निमंकाक्रवदंभवजायमर्त्त ॥ काध
 समयज्ञाननकोधजायमडयन ॥ कामधविद्वत्सीरुगान् ॥ सत्त्वानाहयदम्भयभाहजायदम्भ ॥ निमृगः ॥
 नागवजाह्वाम्बावकायवाक्किरुसंकिगान् ॥ सत्त्वानागवदम्भयभाहजायदम्भ ॥ निमृगः ॥ इषवजाह्वं विलं
 कायवाक्किरुसंकि ॥ सत्त्वानद्वालयकृष्यधजायः मडयन ॥ प्रिवजासमयगत्वं मधमसमयवदिभां ॥ न
 दवसर्ववजाभाजायानयसकडयन ॥ वजाधिवदयः सर्वनागवत्त्वार्थचिककाः ॥ कर्षकिनागजावाधिसर्व

७०

२

सत्यहिर्गेषि गो ॥ तावनायामराविद्यानिर्गैकामाधनत्यनाः सिध्दिकामरात्रे सुसधमानैर्यथवृत्तः ॥
 भाहससयसंरुगाविद्यावाजानवजिगधनवन्नाकवदसिआद्ददकिमिधिनरुमं ॥ कोधादिवालयजागा
 निह्यः सिध्दिकिसावनाथेनसाधकस्याग्रधमिगः ॥ १५ ॥ साहृरगवान्नाहावृक्षसमयः ॥ द्वादिसधगर्गव
 कंरावयज्ञानवजगः सकृमल्लमधर्मसध्वकार्यसावना ॥ द्वादिसधगर्गवृत्तसावयज्ञानवजिगधः ॥
 वज्रमल्लमधर्मवज्रसकार्यसावना ॥ द्वादिसधगर्गवृत्तसावयडल्लहानिनः ॥ वलमधुसधर्मवत्त

[illegible]

मनुवजस्यमनुनानंवनुवयःवनुवलनकल्याददिमंक्राधरावना॥वजवकुथयामिदंकयाधिधनिवजिनी
वधादिसर्वमक्रावीवसंयवमलास्वर्ग॥साधिकसायनाकालयोधिकवसवजिनीवःवःवैवायनवदमः
उक्राधारायानक॥इदंनंनवमक्रावीगुह्यविकायसंक्रवा॥निमिगंज्ञानवजनीकियानाठकनक्रिने॥अरु
क्रिवादिनःसत्यानिन्दकावायवजिनी॥नथीन्यवामयिदूनामिदंकार्यवसादन॥इत्याहुरगवानाहा
ज्ञानवक्रवजः॥गंधाकुकुकिनानात्वावुधकायमिश्रावयन्॥संवत्सव्यानिर्गकल्यानः॥कर्मयसाधकैः

तत्र कुसुमधुधनुर्वज्रवत्सुखं लक्ष्मिं कुसुमं ख॥ सर्वाकांतधरावतवज्रसन्ध्याविरावयन॥ एधं समयसंरुनं
 वृद्धवकं रावयन॥ इति नवाभाविदे कार्यवज्रवकं सहावलं॥ सत्वादशादिकं रुनामज्जकार्यवशदकं मेद
 स्यविद्युयागनसकायनान्यविशयन॥ मृदवकुयनकायवज्रानां नवजिवा॥ रुद्रानकाभिकृताध्यात्वा
 विकृतालकठारिषलान॥ नानावहनलरुमागान्मानभाधिविककान्॥ द्यागयंगमहादकं नवजस
 त्वमयिस्वयंः वृद्ध॥ प्रिकायवेवदिवडातयंसलुसभदकागिसिद्धिं माहात्माक्रियन्नात्रगमयधदिनानि

७२

साकदं कार्यवज्रस्याविनसिध्दि॥ वज्रसमयज्ञानचक्रनामसमाधिः श्रवधनुमध्यगर्गयुक्तं वज्रहाताविरुचिर्गं॥
 सर्वाकांतधरावतवज्रसन्ध्याविरावयन॥ एधं समयसंरुनान्वज्रसत्त्वान्महायथाना॥ वज्रस्य त्रिगगहनं या
 स्यविरावयन॥ सत्वादशादिकं रुनामज्जकार्यवशदकं मेदस्यविद्युयागनसकायनान्यविशयन॥ मृदवकुयनकायवज्रानां नवजिवा
 विकृतालकठारिषलानाग्रवन्ना॥ ३८ धनुर्वज्रवज्रसमाकार्यवाक्रिरुयागनः ३९ वज्रवन्ः ४० मानाग्रहा
 वक्रवयाजकं नवजं भादिकवक्रवात्सलयागिप्रिकायज्ञानसमययथादसमयविधीयनात्रगं मेयः॥

चक्रसमयहानवज्ञानामसमाधिबुधवज्रमध्यगन्धर्वमल्लनवज्जिं॥यमानुकुमलवकमव
 ज्ञातवकल्ययन॥दृष्टांश्चन्द्राधसंरुनानावविष्णुनिकायमल्ल॥वनमुखावयवज्ञान॥यमानु
 काकावसन्निताने॥सर्वत्वम्याधसंरुनागिवेभंडकुचनसा॥द्यानिनानावयवकुच॥३३॥दम्पजाहामल्ल
 लं॥सर्वसमयसंकेवयमानुकुचिकायहानवज्ञानामसमाधिःकायवाक्चित्तवज्रमल्लमन्त्राधग
 लनवा॥अथवाक्चित्तसमयः॥ग्राह्यवकवथाङ्गनं॥वक्राथमवमन्त्रांकायज्ञानाग्रवज्जिं॥३३॥

५३

३

सर्ववद्वानांवाधिबक्रार्थसद्यः॥३३॥ह्यारुगवानवाधियिलः॥खवज्रमध्यगन्धर्वमल्लनवज्जिं॥यमानुकुमलवकमव
 ध्यात्वापिकायंभ्रातृनंकुचकल्ययन॥खधालंमववज्रमल्लनवज्जिं॥यमानुकुमलवकमव
 कानंयकल्ययन॥वनमुखावयवज्ञानविल्लवज्रमल्लनवज्जिं॥यमानुकुमलवकमव
 यारुगवानवज्रमल्लनवज्जिं॥यमानुकुमलवकमव
 द्याल्लकमलः॥३३॥ह्यारुगवानवज्रमल्लनवज्जिं॥यमानुकुमलवकमव

वधुः वज्रोदधिवद कान्नामसमाधिः माहात्म्यं लं न्यसन् ॥ कमवज्रवदाकारं
 मयि न स्यात्तावयना ॥ २ ॥ स्याद्वसवसर्ववीथाय नव वादिमुक्तं न वज्रानामसमाधिः ॥ काधकावन्ति वजागांवी
 नृकिञ्चलसुगिरान् ॥ गिरिविनाज ॥ वसवो नृध्यात्मा मध्वि रावयना ॥ वज्रं न्यसयिमुक्तं नृव वनावगसयः ॥ ७४
 ॥ स्याद्वगवान् सर्ववथा गद कायवाक्किं सख्यं सर्वमेन्यमुक्तं नानामसमाधिः ॥ विवृ संज्ञा नममयमिदं ध्या
 नं वक्तव्यं ॥ अत्रिकमद्यदि वज्रावाक्कृत्वा न वसवसंयः ॥ ३ ॥ स्याद्वगवान् सिक्कसमयः ॥ इकावकी लकं वा

तावश्च लं यमा धतः वज्रकिं लक्ष्मं न नद्रदयस्व तावयना ॥ वज्रं न्यसयि कुदं नागं गजं वज्रसयः ॥ विवृमा
 लायकायानामसमाधिः ॥ न गव वाज्रं धवाग्राभविषये अथ वावया अयन ॥ जनन निखरुवेक निःसर्व वागाव
 वज्रिना ॥ अत्रयीकृ गव वज्रं य ॥ ३ ॥ लं वसावयना ॥ कल्यादीहमविध्यात्वा वनः संज्ञा नमा दिन ॥ नमस्क
 वलं वयनः कायं वृत्तयिनाम विवृ रः ॥ वसवसममेधा चैव शिवकसमाधिदि ॥ ३ ॥ जनन ध्या नं वज्र
 नृवः वना विवययना ॥ मरुवचिनाम विवृ रः ॥ न वज्रयसा धकः ॥ वज्रमेधेम होधमे वज्रसख्यं

स्युः नृणां। त्रिकल्यासंख्ययमवरू न सर्ववद्वधिविद्यना॥ दैक ना सर्ववज्ञानां काय गुह्यमनाविनं॥ सर्वस
त्वा यागावनयनवज संरुचनामसमाधिः॥ ध्यानवजनसमादाये कुरु नसा मा वै वदन॥ ज्ञान ध्यानयात्मनः
विष्णु नवधेव विद्यना॥ ध्यानाष्टमराचा जं वजनी लयं च रावयन्॥ निश्च नद्ध भदिगवेक स्फुरति गका रसुनि
हं॥ पूछारुवजगदिनय भाद्रिका नाम समाधि शिव धातु सधायें विक्रान्त मूर्ते नमस्तुभ्यं॥ विश्वदेवा
वन धाम ताम्बहुदय धिनय सन्॥ खधातु लाचना जे सुवविय ह मितावशन्॥ मंद स्वधर्मिय पुन

आरुनस्य निवाग्य ॥ नाम कृवाग्यविवेकमयां स्युः वदन्ती ॥ अरिषक कदा न स्युः वदन्ती मया ददन्ति हि ॥ अन
 न वदन्ती मया ॥ श्रीमान्नाम कृवाग्यविवेकमयां स्युः वदन्ती ॥ वदन्ती मया मया वदन्ती नाम मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती
 रुन्मा रुन्मा मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती
 रुन्मा रुन्मा मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती
 रुन्मा रुन्मा मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती
 रुन्मा रुन्मा मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती मया मया वदन्ती

मरुवसिकामलिःशीमान्नानवजानदुजार्थसाधकः। वधमोसद्योसमयकृदोनामसाधिःस्वधानुमधग
 नंश्चिकेवजवज्जमल्लं॥विमरेववजधर्माग्रमधिनंदुदयन्यसक॥वज्जिह्वाधिमल्लेध्वानिवृक्षरक्त
 मुलं॥विंदवज्जिवात्तनामज्जमल्लययागरनामरुवककृष्णद्वेमेवमनामरुकेकः॥५॥इतीकत्वश
 कांशःसरवज्जदकमकृष्णददनिवद्व्यात्मानेभप्रसिधकंमल्लानाकाःवज्जिवावयकृगवसवदणत
 नेवयादिनः॥वज्जमद्यममयवृक्षोनामसमाधिः॥स्ववज्जवज्जमेः॥कृष्णवृक्षः॥काश्चिसदावृक्षः॥५॥गम

७५

विक्लिष्टकाकेनृत्विः॥५॥नैवसावयवज्जमल्लनमकृष्णवयद्विधवःमदाः॥जुवकाविसर्ववृक्षानां
 ध्यात्वायादयनाजर्नकृष्णध्विनाद्यमवनाकृष्णयसावयवना॥नानायद्वनमधनाकामेरावयवना॥मियनना
 यशवज्जवज्जधवावावियद्वननयसावयवना॥यकायकृष्णवयवना॥मियननाद्वनायशवज्जमरवधममयकृ
 दानामसमाधिः॥विमरेववज्जवज्जमेः॥मिगकृष्णमल्लवकृष्णवज्जमकृष्णमल्लि
 ना॥विमरेववज्जवज्जमेः॥मिगकृष्णमल्लवकृष्णवज्जमकृष्णमल्लि

कनका

गिरं विरुड ककुभु सिन ननं ॥ जडा कडा सं राग सावयं मिथुन धूवं ॥ चक वज म हा व मंद क्रि ॥ गय ॥ वी
 सावय नाख डरु डा सावय दडा ना ना व हा न धन ॥ रा न ॥ ना व ना कि म रं वा चि न स व स ल हि न वि
 ना सि न क कु म हा न कां चा क क यां वि सा व य न ॥ स्व व ज न नी मा हा वा ही नि म रं वा रा व य न म दा ॥ लु व न
 का सि ना का नां क क यां वि सा व य न ॥ वा ग्य ज न नी मा हा वा ही नि म रं वा रा व य न म दा ॥ न का सि न क कु
 यां वा क व हां वि सा व य न ॥ व डा ल्य ल ध नां वि था नि म रं वा का नि म य रा ॥ पी न क कु सि ना का वा ६

७१

२

सावयं हा न मा प्र या न ॥ य मा क क म हा का ध नि म रं वा न म व रा ग य स्या वि रु यं क क कु व र्क वि सा व य ना ज
 व ना डि ना म हा का ध नि म रं वा न म व रा ग य स्या वि रु यं क क कु व र्क वि सा व य ना ज
 व ना डि ना म हा का ध नि म रं वा न म व रा ग य स्या वि रु यं क क कु व र्क वि सा व य ना ज
 व ना डि ना म हा का ध नि म रं वा न म व रा ग य स्या वि रु यं क क कु व र्क वि सा व य ना ज
 व ना डि ना म हा का ध नि म रं वा न म व रा ग य स्या वि रु यं क क कु व र्क वि सा व य ना ज

यत्तु सदा॥ नीलवर्णसदा कार्धने लाकृष्य रायचंद॥ प्रिसखंति वज्रसंखनं नीकृदा लभ्य रं रावयन॥ वज्र
 चतुसदा कार्ध के कवे वज्रसंखनं॥ खड्गवा गधवं सोमं निगखं रावयनं दनी॥ न काम च म हाव्य॥ च विम्या
 चकसमकनः॥ प्रिसखं व डि न दी यं रावय द्या नम लु ला॥ गुरुं ह्य नाग्रधवं क वं रुथा न विमं व रं॥ निम
 खं द्या ला विवयवं रावय द्या नम व रं॥ कडा चा गी ड था वी यं रावय नम क च कि नः॥ प्र सिं श म राय म रा लो रा
 वनी या इव नि य नि न अ मि ना र नि स सा धि नि म ना नी॥ स म दा रु नाः॥ न के क म्य नु का ध स ख ड ड वि शि ष्य

५८

१०

नाश च यु म ध्व ग नं वि व न् रु रु म लु ल म रु मं॥ वज्र वि व मि रा वि ला वे रा व नं य रा व य न॥ ख ड्ग चं ड नि रं ग
 के ना ना व धि स म य रं॥ आ द ग मि व सं र नं के धा नु क म्य म लु लं॥ सर्वा को लं त वि नं ध्ये ला व धि श ष ध नि
 ज न न व द्य मा हा ल्ये स र्व स ल व सं क र॥ वा य न ड न नी हे व ध्या न व ड य रा व नै ध वे रा व न म रु व वा रु व डा
 ना म स मा धि श्र व धा नु म ध्व ग नं वि नु रु ड म लु ल म रु मं॥ वज्र वि म्य मि रा यि ला व ड स ल व रा व य न॥ ख ड्ग का
 य नि रं रु द् न ना का ल रु य च दं॥ सर्वा को न व ना य नं स वा लं का ल रु धि नं॥ ध्या ला ह्य न व दं गं कं ले च व ड स ल

मायूयानाचननवजसाहस्यं सर्वसत्त्ववधकर्षं ॥ पावकजनानीहवध्यानवजरादिनः सर्ववजसमयसर
 वनाचवजानामसमाधिः शिववजसध्वगर्भविन्दुममलसलसं ॥ वृद्धमिन्द्रवरावित्ताधमनलविचित्र
 यना ॥ स्वकृकायध्वसोसवालकावरुषिणं ॥ वधिमवमहावजसिन्द्रवनायरावयन ॥ जननध्वमसाहस्य
 त्योनि कायारुधसंरावा ॥ पावकजनानीहवध्यानादधिविरुधवं ॥ धर्मवजसमयसरववाचवजानामस
 माधिः वाचवकाविधाताक्रीनानाश्वसंरुषिणं ॥ सर्वलक्षणसंवर्णास्मीमायायध्वविनी ॥ वासीवरा

७७

वयव्वकं वधानुकवर्षकलं ॥ सर्वसिद्धिकवर्हानवकुर्विनामलिवदं ॥ नाचनाममयलुक्ताग्रवनीनाम
 ममाधिशाखवजसध्वगर्भविन्दुममलसलसं ॥ वृद्धमिन्द्रवरावित्ताधमनलविचित्र
 कोविधाताक्रीनीलात्यलसमवरिसर्वलक्षणसंवर्णास्मीमायायध्वविनी ॥ वासीवरा
 नुकनमस्कृता ॥ वृद्धवाधिकवर्दिवावरुस्यसिद्धिवर्जी ॥ ॥ स्वमानवधिमववजसाहस्यवनीनामसमाधिः ॥
 शिववजसध्वगर्भविन्दुममलसलसं ॥ वृद्धमिन्द्रवरावित्ताधमनलविचित्र ॥ वाचवकाविधाताक्री

वसुधा नोडमन्त्रिरा ॥ यथा सत्यं संरुगां वा गवकधवयियां ॥ सर्वतद्रु वसं यक्षसं वलं कालरुविनां ॥ या ॥
 नक्षत्रा लदिवं सर्ववद्रु राविन ॥ धर्मज्ञाना कवेदिवं शुक्रं समयवदि ॥ धर्मसमयनत्वा रिमं वा विद्वज्ज
 नवका नामसमाधि नारवजसध्वगर्ग विन सिद्धि मल्ल लम रुमं ॥ वृद्ध वित्तै म्यरा वित्ता ना वागी नु वरा वयन
 वा कवकां विवाकी ना नारवधरु विनां ॥ विन वरु निरा ध्या ल्पार्त्ता साधमदन्ना न्ना को या लो वरा वयड कुड ल्प लं वी
 नसात्तिरं वजसमाधिसं रुगां सर्वसत्त्व नमस्तु नो ॥ समयना नायवनिनासमाधि धारवजस ध्वगर्ग विन नयम

५०
 २

लम रुमं ॥ वृद्ध वित्तै म्यरा वित्ता यमान कागमिरा वयन ॥ स्फु लिंगगहन दीकं सका वृत्तयम गुलं वका कदंका
 विकटारुद्र वा श्री मिरा वयन ॥ मरुट वं वायन वदं ध्या ल्पानु य निवडी ॥ ध्वज्या हि सवका धाना तु मया
 कौस्तुभ नवदि ॥ यमान कस्या वभा वरा सन वरु नासमाधि नारवजसध्वगर्ग विन नयम लु लम रुमं ॥ वृद्ध
 वित्तै म्यरा वित्ता जवला जिगारु वरा वयन ॥ स्फु लिंगगहन नदिकं सूर्यमालि नमरवलं विकला वं विकट वकं
 सिनय वरु वरा वयन ॥ मरुटा जक्रा य समय ध्या ल्पानु य निवदि ॥ ध्वज्या ही सर्वका धानां समया कं स्तानवदि ॥

जवना जिगवज कदा नाम समाधि शरवज मध्यगन चिके नार्यम लं मरुमं ॥ वद विमं रौ वे विला हय धिवं
थ रावयन ॥ स्फालिं डग रुनदिकं विस्का वनं सम नग ॥ सर्व इव वद जो ना वरु विम मि रा वयन ॥ मरुठा
रमि नमं वदं ध्या न कथ निवजि ॥ न धादि सर्व को धनां समया क हान व जिनां ॥ रुय गी वा ला दन मरु व वरु
नाम समाधि शरवज मध्यगन चिके नार्यम लं मरुमं ॥ वद विम मि रा विला वदाम न व रा वयन ॥ स्फ लिं डग
रुनदिकं वज मय समा कलं ॥ कदं म वा वं क वृ निह दं व्यु स रा वयन ॥ मरुठा र्शा स मय ध्या न कथ ॥ १

७१

निको धध क ॥ न धादि सर्व को धनां समया इ न निक म ॥ न म न मय मं रु व व ज नाम समाधि शरवज मध्यगन
चिके नार्यम लं मरुमं ॥ वद विम मि रा विला वदाम न व रा वयन ॥ क वं विरु न द हा यं रा य स्या विरय क वं ॥ म
वो लका व सं य र्हा रा वय वज मरुमं ॥ मरुठा र्शा स मय ध्या न क दि व व रं ॥ न धादि सर्व को धनां समया इ न
निक म ॥ ध्या न वज म न्वा वि न नि नाम समा धि शरवज मध्यगन चिके नार्यम लं मरुमं ॥ वद विम मि रा वि
त्या न हा व लं य रा वयन ॥ स्फालिं डग रुनदिकं विवजालय म लु वं ॥ क वं या ग ध वं क दं रा वय द ल व जिनां ॥ म

कटाः कायसमयं ध्यात्वा कविवर्धनं ॥ जवाहिरसर्वकाधानां समयाइव निकमः शिवजम हावना नाम समाधिः
 खवजसमधगनं चिकनार्यमलुलमरुमं ॥ वद्विस्मय सावित्वा नीलवर्णयसावयनं ॥ कृष्णवर्धनं नीलकण्ठवर्धनं
 ववर्धनं ॥ स्फालिजं गहनं नन्दिकं सावयद्वुवजिभं ॥ मकुटं कायसमयं ध्यात्वा कविवर्धनं ॥ जवाहिरसर्वका
 धानां समयाइव निकमः ॥ वद्विस्मय सावित्वा नीलवर्णयसावयनं ॥ कृष्णवर्धनं नीलकण्ठवर्धनं ॥ वद्विस्मय
 सावित्वा नीलवर्णयसावयनं ॥ ककवन्मिकुनं कुं दं वाधरुधुधवन्कलं ॥ स्फालिजं गहनं नन्दिकं सावयद्वुवजिभं ॥

५२

नकुटाः कायसमयं ध्यात्वा कविवर्धनं ॥ जवाहिरसर्वकाधानां समयाइव निकमः खवजसमधगनं चिकनार्यमलुलमरुमं ॥ वद्विस्मय सावित्वा विद्यावर्कयसावयनं ॥ सर्वलकृ
 संवर्णवक्रा लाव विवर्णं ॥ डक्खिवयकसमयं विस्मयवर्कयसावयनं ॥ मकुटं जक्रुयसमयं ध्यात्वा कविवर्धनं ॥ जवाहिरसर्वका
 धानां समयाइव निकमः ॥ डक्खिवयकसमयं विद्यावर्कयसावयनं ॥ खधानुमधगनं चिकनार्यमलुलमरुमं ॥ वद्विस्मय सावित्वा वज्रसूक्तयसावयनं ॥ निष्कला लाविवर्णविस्मयवर्कयसावयनं

जि ॥ वज्र रुक्म माहा कानं वरा वयसि द्विमाय्यानाम कठ ॥ कात्यसमयं ध्या लागु विवर्धनं ॥ नया
 द्विसर्वका धर्मा समया इव निकमः वज्रममया सकुवे जा नाम समाधिः निवाधका धव के न वधय क नि
 धवि ॥ मममाधिवज्रहाना नि सि ध्वने वज्र मलु लान् ॥ ७ ॥ रयरयरयरयरयरयरयरयर ॥ ॥
 ८६०३७ ॥ निमि सवेन था गन काय वा क विरु वरु सा गु क्रम मा धा वज्र समय क रु न ला धे रा व ना
 मी वा धि य ठ ल मु या द हा ध्या १७ ॥ १६३३३३३३३३ ॥ १६३३३३३३३३ ॥ १६३३३३३३३३ ॥ १६३३३३३३३३ ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

विनमः २ समय मनः स महं हूं ऊट्ट ऊट्ट ऊट्ट य २ स को माया प्रयत्न कर १ रु रु ग व न कि कि रा य सि म य स वा था न सा य सा का ॥ ० ॥
 अथास्मिन्नाधिकमात्रं सर्वं द्वायमायमात्रिकाः स लु स म न मा व ड वि के म न म न न क या व न नि व र्ध ण वा वा क रू र्ध म नि वि र्ध म या २
 दा जा न ग न क क ता म लु म न म न म न न म ला व न मा मा के वा यि म कि वा यी म हा व ड क ता व यान् दि वि न वा या न म य म कि व मा क ५७
 यान रु क्षा दि त्या द रु ग वा न वा वि वि रु व ड ४ अ थ रु ग वा न वा व न व ड रु ध ग न ४ स म य व म म ग रु ना ग न्ना म स मा भि म मा म य म म
 म र स म य व ड का धे स का ये वा कि रु व ड यानि धा व य म न म स म लु का य वा कि रु व ड धा म न मा व ड का भ य म हा ड का क दा र

नवायश्चमिस्वययससयाजहस्तयडंश्चमरुक्कुसिखसखाहि २निष्ठ २व २रुन २दरु २यच २गर्ज २विस्फटय २सर्ववि
प्रविनायकानासहागधयतिजिविनालुकाजायर्क ६रुटखादा ११अथस्मिराधिर्गमार्गसर्ववृद्धामहात्मजाहीता ११सनुकमनस ३
यवजकामनसमन ४सर्वमनुयथागववकात्राटयधी १५उत्राटयत्रिविधिनावृद्धसेनामयिस्वय ११अथरुगवानुपलक
रुसुथागनद्वयवभिबजनामसमाभिसमायश्मैवजायवाजिनमदाकाधसकायवाक्किरुवजशानिष्ठावयन ११नम ४समने
कायवाक्किरुवजान १५हंजिनविट्टाकाहंरुटरुटखादा ११अथस्मिराधिर्गमार्गसर्ववृद्धामहात्मजाहीता ११सनुकमनस ३

वायुविरुद्धमनसमनवाकसुधादुदनेषुमहालयसमाकुलकवाटिप्रिधिवक्त्रमेवजविरुध्ययूजनातस्थरुगवानभिताय
 नथगतासमुद्रवदन्नामसमाप्रिसमायशर्मयद्रदर्शयवान्नाममहाकाधस्रकायवाक्त्रिरुवदन्नानिधाययत्ननसमन
 कायवाक्त्रिरुवदन्नानां॥५॥ हं हं हं नवलविलेससर्वविषघाटककालितविरुलिदादादादासकसमसधाययत्नकावदकय
 रनिगानवलितवसुधनवलितधसमावृणक्तिफधवधीधनलिखतदादादासअपवीमिनवनपुत्राकुमस्ययगधलिगहन
 गतावायिनवृध॥२॥ हयशीवखादश्यनमकुंठिन्दशसिद्धिमदिश॥२॥ आवशाय॥ सर्वकसधिसावादिहसर्वगुह्यपनिहतास

[illegible]

कायवाकुरुवडाभां॥६॥सूक्तनि॥२॥गकापय॥२॥जानयदातगवानविशाया॥३॥दृष्टवन्मथस्मिन्नायितमात्रसर्वकना
महद्विकामककभाविदमुभावजसत्त्वमनुसमनेनवजसत्त्वयदाकाकासवेनथागतोवियेवजाकुरुयाजानसर्वकनाय
वेनकुर्वेत्तथातगवानसहासमयतत्त्वयतिवडानोमसमाधिसमाययमोमहासमयतीवजमुद्रवाकसमयतत्त्वयदस्वका॥६॥
यवाकुरुवडाभां॥६॥नयन॥४॥वडागीकायध्ववडासत्त्वविरावना॥५॥वाधवेजाकुरुयाजानसर्वकनाय
कायागधमहायकयथागत॥४॥वडासत्त्वमदानाकाकुवमाकुरुयाजानसदा॥५॥वडायधमहायवेजोमिवजा॥५॥वाधवेन॥५॥वजाकुरु

हायरुयनसर्वमनुकर्षहापत्रसमकुपूत्रयंभाससर्ववजसयतिवे॥कनाकुमानुधि॥७॥६॥वडाकुरुयाजान॥४॥वागमनुलिधा
लगजकुवमाकुरुयाजानसदा॥५॥वाधवेनमहाविरावना॥५॥वयचन्द्रमधुर्लसविगुस्तिगाविमुद्रजामृगयथागन॥४॥यधमहावाकुरुयाजान
वमाकुरुयाजानसदा॥५॥वजाकुरुयाजानसदाविरावनी॥५॥कोलासमयुर्लवडामेधुसकथा॥५॥वाधवेनकाकाकना॥५॥मरुमेवस्वकाधत्तडासमय
म्वजपागात्रवागिनीसुलवडा॥५॥यधददत्यकर्मयत्र॥५॥मेवीकांतिटिकांतायि॥५॥वजाकुरुयाजान॥५॥वडाववागसमययधुर्ल
साधयन्॥५॥वडादिदवानुदका॥५॥नामयसा॥५॥लिधमृग॥५॥वागकुरुयाजान॥५॥वडाववागसमययधुर्ल॥५॥वडाववागसमययधुर्ल॥५॥

यत्तु यमानकमहाकाधं वडा कं विविधमन् १ कल्या दारुमहावर्कं आ साय ह्रीं दुष्काधयन् १०० ह्यारु व मूडा रुद नरुध वीमकु रुद नरु
वैष्णोऽप्यकषेध यद पुा कुन्ध व सा गीस वा स्यात् १ वडा स समहा वाजा वादनि आ मु र्के मु र्के १ स ७ वीस नमकु १०० ना जाय न मवे सो तः अथ
रुग वा समक विरुक्ति न सन वडा त्रय स मा धि से मा य शर्म वे हं क रु टा न्ना म समर्थ य वा जि न बा ग्य दा पी स का य वा कि र्क व ड ह्या निष्ठा १०
वयत् १०० ह्रीं नि नी हं सा हा १०० आ सां सा ध न मा जा यां ना ग क न्ना म रु धि का द रु मा ना वि व क्ता सा व द्वा वा धि म न् स न न १०० न मकु वि श यी
स र्वेष्वा क्थ्या के य स्रग् १०० ना ग क न्ना वि ष्म ना रु स मा रु ध्या य रु द य ग् १०० प रु न वा न् न ग् १०० स म य ह र व न्ना म स मा धि स मा य शर्म म

हाम मे स म य व ड रु क्ति स का य वा कि र्क व ड ह्या निष्ठा व य ग् १०० ह य ना स स ग ड न ना स या स य २ रु क्ति ट टि व र नि २ वे व टि २
रु १०० व न ड टि नी सा हा १०० आ सां सा ध न मा जा यां स र्वेष्वा धि वा न् न ग् १०० क वि ता रु य मे स द ह न वा ज म न् स न न १०० वि श्रा ध य म
हा क न्ना व र्क क न क रु ना मा रु ध स म या य न न न मा म नु वि श यी नी वा ध व ड जा य न वि ष्म न ना ग वा न् न र्धा १०० व ड स न र्क रु ना क
म रु ध्या नि स र्वे १०० प रु धा र्क वि ष्म आ सां स य जा य न म कु त १०० स र्वे क म क न १०० ना वि ड न य म रु स न १०० वा य नि न य न य ना म रु
ना ग नी रु क १०० ना व नि मा य य ह न न य वा व रु न वा न र्क १०० न न वा धि य न मा स म नु सि द्वि ष्म या प्प या न् १०० ह्यारु व १०० द स दि

[illegible][illegible]

स्थितिः प्रयासात् ॥ ६ ॥ घट्टाट्टय २ सर्वदृष्टान्तरुद्धकीलय २ सर्वपापानरुद्धं हं हं वज्रकिल वज्रधरायाः सुप्रयत्निका
 यवाश्चिह्नवज्रकिलय हं हं ॥ अथासिंहाधिनमो न सर्वे वज्रा मरुधि का ॥ मूर्च्छिता रुयमाय न्नाखवज्रविरु मन्सुवन् ॥ मा
 नूपास्मि मयकी समथवा तदि नाशु न ॥ अथामयक न कीर्त्ति वज्रकायविनाशनं ॥ वज्रासल समायय ह्नि म कलसु उर ॥ १२
 वज्रकायय यन्तु विमं ध्मा तां यथा जय न ॥ वेत्ता वनम हा म् डां यथा ग्वजिना ॥ यमान् कर्म म हा म् डां ध्मा तां वज्रकिल न ॥ कधुन
 वज्रशव भद्र क् सुनिरुक्त न ॥ कर्त्तव्यं वेत्ता या जन वृद्ध सायि म हा म् डां ॥ हृदये पाव सा दानं वज्रकील वी राव न ॥ दुर्मान् य

वसु मयं, हृदं किल विहा किर्त्ति ॥ वक्षान वज्रयथा गे न ॥ वज्रसल म हा म् डां किल यन्तु य न व ॥ अथ रुगवान् म
 हा वेत्ता वन काय विहा किर्त्ति वज्रनाम स मा धि स मा य धर्म ॥ काय समय रुय वहा किल न मन्तु स काय वा शि ह व ज्ञानि न्ध्या न य
 ॥ ६ ॥ ह्नि न्द्र २ रु न २ द ह २ दी फ व ज्ञा व क् ह्नि ह्नि ॥ अथा न्ध व घ्ना का न म गु य य द सी ल न ॥ वेत्ता वन य दा का न व ज्ञा की ल नि पा न
 न ॥ ह न मा न म हा स ल्पि का य व हा स ह्नि ॥ ६ ॥ ह्नि स म या ॥ न ध व ना स य द रु व न ॥ अथ रुगवान् सा क ध्मा वा न्धि न न
 म स मा धि स मा य धर्म वा क् स मा रु म की ल न मन्तु काय वा शि ह व ज्ञानि न्ध्या न य त ॥ ६ ॥ १२ ॥ व ॥ ४ ॥ विक सि न्द्र न य म

[illegible][illegible]

भननममक४सुखसदा॥१॥पादशान्कधननमकुसुमयसकस्यवित्त॥१॥ति४३कृति॥कृत्वाप्रियप्रनकुसुमयसुदुनवधनयागगद
वागयनकुर्वन्॥१॥हंकासकालसंस्कृतिवजवितावयव॥१॥वृद्धिनिवजन्तवा॥१॥सर्वसत्तद्विनिर्गमिन्॥१॥अननसुखमवापि॥१॥यननातीभन
य॥१॥कमिवजमहादिकंरुसि॥१॥कहनाकुर्त्तमध्यवजवितावित्वावातिरुक्तनमृदुर्ममधुसतिरुक्तमग्नकवाययदिज्ञायगाडकसु ॥१॥
जंगणवद्वेदससमनस्य॥१॥वृद्धेवाधिसत्त्वधनितिर्गवाधियववृत्तीयिर्गद्वेदमात्रगतनवनामसमसुयात्विज्ञायवाधिस
त्वाधयवनाद्वेदकुरुवासासितननमर्गनमियतना॥१॥उद्यत्समधुनदसर्वेनथानमकुनरुसुद्वदयैरुद॥१॥ससत्त्वयागममध

विस्मयतावयव॥१॥हंयश्च॥१॥अभिप्रायदिकं॥१॥वावयवजयानिनसुकायवाक्रिहेवजम्॥१॥आकययथावाधिनानुयात्सर्ववर्गक
नादवमं॥१॥शीकुल्लन॥१॥वावजसत्त्वमहाजावावृद्धि॥१॥कायवजधृ॥१॥वजसत्त्ववजात्मादनवजानामसमाधि॥१॥आसिकाविधिनांव
सुवक्रादिति॥१॥विभीषक॥१॥पालतु॥१॥युजां॥१॥उक्त॥१॥रुतिरुक्तयत्॥१॥सर्ववर्गकृत्वा॥१॥दवमं॥१॥शीकुल्लन॥१॥वावजसत्त्वमहाजावावृद्धि॥१॥कायवजधृ॥१॥वजसत्त्ववजात्मादनवजानामसमाधि॥१॥आसिकाविधिनांव
जावूनदजनपुरु॥१॥रुक्त॥१॥वाथवाधिसुमात्तवागिपुद्वनयत्॥१॥अहिमसुविधाननरुक्तनेवृद्धनद्वेद॥१॥वृत्तारु॥१॥विष्टेय॥१॥विधानने
जनानगीवृत्तान्यसु॥१॥वागवनासवायवृद्धस्य॥१॥द्वय॥१॥स्नानमासेविधानन॥१॥रुत्तरीय॥१॥नया॥१॥गद॥१॥रुक्तयै॥१॥सुवद्वय॥१॥वि

[illegible][illegible]

रुम्भेमातीदुरुम्भेमायावहुकाकृपेध्रुवाकाडहिकनरुयमुकावहुवाजयवादिमा॥१॥नथेवसध्रुवाधपुवेमिदंमुयसुनावहुमितिअथवडा
धनानाजासवेनधामताधिप॥१॥कियपदसैहुहुहुदयाधमुदित्रयन॥१॥ननकायगुनतामिहुदकार्यंहुदवु॥१॥कतवीनानय॥१॥
नसवेदुविदागते॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥
हानवेजीरुसनासुरुमा॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥
विनयजि॥मरुमा॥१॥नसवेधाननवकीसुहु॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥

कभूकागोशुरुनुहा॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥
वादनपद॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥
काधनसधर्ति॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥
अंगजिकसैयकैविद्गुगभाधिघुत्रिगै॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥
यंनम॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥ननममुकुनिसादुत्याएनाकमपिनाधयेन॥१॥भा॥१॥यनिकगीकलाविष्णोमननुवादिरे॥१॥

[illegible][illegible]

४४ अथ वृद्धावस्थायां सौख्यं कथं भवति ॥ मरुत्तमं नीलसंज्ञं लिख्य कर्तव्यं ॥ वृद्धास्तु यदि त्रयं तस्य ॥ ४५ ॥ सौख्यं सौख्यं सौख्यं ॥ ४६ ॥
 सौख्यं सौख्यं सौख्यं ॥ ४७ ॥ कथं भवति ॥ ४८ ॥ गण्डं दृष्ट्वा वृद्धा कर्तव्यं तदसौ ॥ ४९ ॥ कथं भवति ॥ ५० ॥ कथं भवति ॥ ५१ ॥
 कथं भवति ॥ ५२ ॥ कथं भवति ॥ ५३ ॥ कथं भवति ॥ ५४ ॥ कथं भवति ॥ ५५ ॥ कथं भवति ॥ ५६ ॥ कथं भवति ॥ ५७ ॥
 कथं भवति ॥ ५८ ॥ कथं भवति ॥ ५९ ॥ कथं भवति ॥ ६० ॥ कथं भवति ॥ ६१ ॥ कथं भवति ॥ ६२ ॥ कथं भवति ॥ ६३ ॥
 कथं भवति ॥ ६४ ॥ कथं भवति ॥ ६५ ॥ कथं भवति ॥ ६६ ॥ कथं भवति ॥ ६७ ॥ कथं भवति ॥ ६८ ॥ कथं भवति ॥ ६९ ॥
 कथं भवति ॥ ७० ॥ कथं भवति ॥ ७१ ॥ कथं भवति ॥ ७२ ॥ कथं भवति ॥ ७३ ॥ कथं भवति ॥ ७४ ॥ कथं भवति ॥ ७५ ॥
 कथं भवति ॥ ७६ ॥ कथं भवति ॥ ७७ ॥ कथं भवति ॥ ७८ ॥ कथं भवति ॥ ७९ ॥ कथं भवति ॥ ८० ॥

न नया ॥ ८१ ॥ कथं भवति ॥ ८२ ॥ कथं भवति ॥ ८३ ॥ कथं भवति ॥ ८४ ॥ कथं भवति ॥ ८५ ॥ कथं भवति ॥ ८६ ॥
 कथं भवति ॥ ८७ ॥ कथं भवति ॥ ८८ ॥ कथं भवति ॥ ८९ ॥ कथं भवति ॥ ९० ॥ कथं भवति ॥ ९१ ॥ कथं भवति ॥ ९२ ॥
 कथं भवति ॥ ९३ ॥ कथं भवति ॥ ९४ ॥ कथं भवति ॥ ९५ ॥ कथं भवति ॥ ९६ ॥ कथं भवति ॥ ९७ ॥ कथं भवति ॥ ९८ ॥
 कथं भवति ॥ ९९ ॥ कथं भवति ॥ १०० ॥ कथं भवति ॥ १०१ ॥ कथं भवति ॥ १०२ ॥ कथं भवति ॥ १०३ ॥ कथं भवति ॥ १०४ ॥
 कथं भवति ॥ १०५ ॥ कथं भवति ॥ १०६ ॥ कथं भवति ॥ १०७ ॥ कथं भवति ॥ १०८ ॥ कथं भवति ॥ १०९ ॥ कथं भवति ॥ ११० ॥
 कथं भवति ॥ १११ ॥ कथं भवति ॥ ११२ ॥ कथं भवति ॥ ११३ ॥ कथं भवति ॥ ११४ ॥ कथं भवति ॥ ११५ ॥ कथं भवति ॥ ११६ ॥
 कथं भवति ॥ ११७ ॥ कथं भवति ॥ ११८ ॥ कथं भवति ॥ ११९ ॥ कथं भवति ॥ १२० ॥

पूर्वितं वसीदात्र कृत्स्नमयं रादने शसितसन्निर्वाणं नयदं शुचैर्नरुसां हानानिर्मलं गण्यमानि वासुधाधिपिकित्सावज्जद्वयमक्र
कृतयदानि ॥ जिनाजिक ॥ आत्राकि नवजवृकाथ वाकनयदमिष्टरुकि गुणवर्द्ध ॥ सावयत्तादृशी विमिश्रवाधिवज्जयवादर्भ ॥ वान
लाकारसमयमर्थवाधाने स रूव ॥ सवायवाकिरुयधननिधुननिविदिनयत् ॥ वज्जवा ॥ धेवावज्जवाकवज्जधमत्वावज्जयदस्थितशकाय ७९
वाकिरुसमयैवृत्तिगतनसावयत्ताततेयगिरिगर्भवृद्धावाधिसत्तामलायसाधमधिष्ठानयदर्नर्माददेनिष्ठसुवकुषभभूषणा रुच ॥ स
कायवाकिरुवज्जषुवृद्धमयानि विनेयत् ॥ वज्जवा ॥ तदाभवासावयवाविभाकधमिति ॥ ददादिकसर्ववृद्धानीवजातत्वाधीमगावृद्धा

[illegible]

[illegible][illegible]

सप्तमयसंस्तुता नृगकवाः अथमिनामरुगवकः सर्वतथागताः आकाशमन्त्रिक्यमतिदर्शनं च वम
 वरुगवकः सर्वतथागताः सर्वधर्मा अरुगकवाः अथमिनामरुगवकः सर्वधर्मा कायवक्रिह वडापदसमय
 सर्वेजानुगर्तः कलरावयं इतस्मिन् तावत् यस्मात्तवाक्रिह वरुगकवाः अथमिनामरुगवकः सर्वतथागताः
 नामरुगवकः सर्वतथागताः आकाशमन्त्रिक्यमतिदर्शनं च वम
 यद्यधर्ममुक्ता तु कनसि तः स्यात्तादात्म्यं यस्यादात्म्यं नास्ति नासौ कनविद्वंसि सतावागतास्मात्तुहिरुगवकः

७३

सर्वतथागतानिः स्वरावाः सर्वधर्माः निः स्वरावाः अथमिनामरुगवकः सर्वतथागताः आकाशमन्त्रिक्यमतिदर्शनं च वम
 विहिनकायस्मिन् नवाकस्मिन् नवाकस्मिन् तं यद्यधर्मसंस्तुतं कनसि तः स्यात्तादात्म्यं यस्यादात्म्यं नास्ति नासौ कनविद्वंसि सतावागतास्मात्तुहिरुगवकः
 गवकः सर्वतथागताः सर्वधर्माः अरुगकवाः अथमिनामरुगवकः सर्वतथागताः आकाशमन्त्रिक्यमतिदर्शनं च वम
 यद्यधर्ममुक्ता तु कनसि तः स्यात्तादात्म्यं यस्यादात्म्यं नास्ति नासौ कनविद्वंसि सतावागतास्मात्तुहिरुगवकः

[illegible][illegible]

रुसस्तिगा ४ सुकायवाकिरेस रुसा रुगवन्तः सवेतथागनाया दुष्करुगुलिमा ॥ अकार्हीरुगुलिर्गिनकायिमा ॥
अथगसर्ववृद्धाधिरुतायावर्थायाका अरुगयाका अरुविरुधमिणाविदावीधयनहृकीस्तिगा इरुवन्तः ॥ ६१२ ॥
अथगसर्वगथागनाकायवाकिरेवदुसायुजसमाजसर्वविरुधमयमावर्जसुगिनामयटल ४ यश्चदहा ॥ १७१ ॥ ८७
अथरुवन्तः ४ सवेतथागत ४ पूनसमाजसागमा रुगवन्तः सवेतथागतकायवाकिरेवदुसायुजसमाजसर्वविरुधमयमावर्जसुगिनामयटल ४ यश्चदहा ॥ १७१ ॥ ८७
रुवयर्धेवधायसर्वगथागतवत्तवजयुजायुर् ४ पूजयामाने सुशायुगवान् वजयाधिरुथागत ४ सवेवजमशुलसि

रुसमयनाजायुर्दुनामसमाधिसमायश्चमवजकायमधुलं सर्ववृद्धानां सकायवाकिरेवदुसायुजदहावजथागत ४ सवेवकायमिमायम
रुलमरुर्माधिरुवजयुगिकाधिसर्वमधुलमरुर्मा ॥ अदहासुहृयकुचिगवदुयश्चसुधारुन ॥ मधुलसर्ववृद्धानां कायवजयुगिकाधिसर्व
नस्यात्यन्तवृद्धां पालिषविधिवजया ॥ अदहावजयुर्दुक्रया ॥ मगार्ध ॥ रुजमरुर्मा ॥ अवेयायनयर्द ॥ अकार्यादिद्यालिषवनाकायवाकि
रुवजाहीसर्वका ॥ शयुनिषयय ॥ अकार्यादिद्यालिषवनाकायवाकि ॥ अकार्यादिद्यालिषवनाकायवाकि ॥ अकार्यादिद्यालिषवनाकायवाकि
र्मासर्वधर्मा नां सयकायवदिनामनि ॥ सवेतथागतकायमधुलं ॥ अथरुगवान् वजयाधिरुथागत ४ सवेवकायमिमायम ॥ अकार्यादिद्यालिषवनाकायवाकि

समधिंसमायशं ग्य कृतं सुतं स्वकायवाचिकं वज्रया ४६ दाडाकाव ४॥ अथमं यं व का मिश्रा धो लमरुमं ॥ विरु वज्रयमि का शं स न मधु
लमरुमं ॥ विंशतिरु मे ४७ य कू की त व मु वि ध न न ॥ वरु का धं वरु का ल म ग य द व ज का व न ॥ ४८ स वा क्य ध ल य द वा ग्व ज रु धा व र ॥ वज
ध नो स दा ज वि श ह म व ता न य न ॥ ग म्म म ध म हा व र्क मालि ख र्पा व म ली स र्व मू डा स मा ल जालि धा दि धि त स न ॥ ४९ मि ता रु य म हा म डं ग म्म ८६
म धा नि धं ध य त ॥ ग द व व ज्र य द व मी स र्व धा य धि क ल य य त ॥ ५० यि य् द्वा वि ध न न ह त्वा म ड ल म र्म ॥ ५१ क प डं ग न ॥ ५२ का या द वं ॥ ५३ किव डी
व ॥ वि मू ग य मू ज स म य ॥ ५४ मि धि न या वा र्ग ॥ ५५ धि स र्व ॥ ५६ मि म या द व न्ति क म धा स र्व त धा ग त वा ग्म धु तं ॥ ५७ ध र ग वा न व ज्र या धि

सुधागन्तः समन्तमध्यवृत्तनामसमाधिसमाधयद्यदयत्रमरुतमृदुलं नरुहस्यसकायवाक्कविरुवड्यानिध्यासयान्त्यस्यवड्या
मलागुलमध्यविध्यंसमालिखित्वा रवमधुनयदंतसकायवाक्कुरुगुह्यं सर्वतथागन्तकायवाक्कुरुवड्यासननरुहस्योद्यीयवमरुतमृदुलं
अथरुवोमेलवड्याधिसुधामेन ४ सवेमधुलीवर्कशक्रवनामसमाधिसमाधयद्ये सर्वमधुलकायवाक्कुरुगुह्यं वड्यासकायवाक्कुरु
वड्यायडदाजदाली ॥ तत ४ सधुलमकुः मनुकनरुहयसूगकनवदानि ॥ कूडं ४ १ ॥ पाणं नीवड्यासुगसनरुहस्यधिनियाकुने ॥ तका
यमनुसलेनयवाधिरुहेरा ॥ तसांसमग्रधिवानहोजरुतार्यमकुदवगान् ॥ अधिष्ठानयदध्यासामधुलानां विकल्पं नैववेगोवमम

हा शार्ङ्गसावनं सावनाकात्रयत्। कायमधुलं यदनम्यं कायवज्जुषावहं। वज्रवमेमहाशार्ङ्गसर्वमेधवजात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न।
हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्।
विमलश्रागत्त्वयुक्त्रयत्रमसिखलिहृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥
यूजयत्। विमलश्रागत्त्वयुक्त्रयत्रमसिखलिहृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥
यासदाहृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥

पत्रकः सुगन्धपात्रमिदं स्वयं भवपदात्रयत्। वेशात्रयत्। विमलश्रागत्त्वयुक्त्रयत्रमसिखलिहृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्।
तत्कमपदं सर्ववृद्धनिशविगं। यथैवृद्धमहानास्तीसूत्रमजगतामसत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्।
विनियोगर्तः ॥ १ ॥ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥
तत्कमपदं सर्ववृद्धनिशविगं। यथैवृद्धमहानास्तीसूत्रमजगतामसत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्।
विनियोगर्तः ॥ १ ॥ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥ वज्रसत्त्वमहाशार्ङ्गमासकिवावनात्रयत्। ॐ दं नु सर्वमनुभां न हृत्पत्रमसा ॥ १ ॥

आतुतिवडाप्रयवतु ॥ सुप्रवाऽथवाविहमरुम कविधननऽरुय दडयाजानसिद्धिन ईरु ॥ वलायगुमहागुयवदसा ॥ सुसर्वजि
धो ॥ सुप्रयमकुवकुयसिद्धा ॥ सुत्वाथययया ॥ ननुदसर्वव डामधुलमकुनाधननस्य ॥ हस्तिमान् रुयमान् स्थानमान् मरुमान् नरुड
यम ॥ दशा ॥ सुसर्वमकुधामव कुयानि नायका ॥ सुप्रवडनिषादधधमधुसर्वद ॥ विष्णुमा न्मरुमान् नवकुययद नर ॥ सुकानिसर्वमकु ॥ ८८
नामे ॥ सुत्वाकलनन ॥ सुत्वाग ॥ सुत्वाहव ॥ सुगवान्मरुमान् कुवडनिषायनृषवडा ॥ साधनेसर्वसिद्धिना मरुसमयसाधने ॥ साधनीयं सु
यमेनवद्विवाधिममिस्वर्ग ॥ सुकथानम्वसुवियेन्विजाकर्षधमरुमसिधममधुसर्वकायवडायायथा ॥ विष्णुमरुमान् समरुग

सुत्वास्यतु ॥ सुत्वावसयुदासायावद ॥ सुसर्वसर्वदिखाहव ॥ ननुदसर्वकुयवडाविहकनमहासाधनयद नर ॥ सुवडमधुगतीविहकन ॥ ॥
कावडालसुप्र ॥ सुवधनकुसर्ववद्वेन्वयलिय ॥ सुमिरावयतु ॥ कायवाकिरुपद नवीनगुमकुनियानभ ॥ ननुदकायवाकिरुमकुवडा
धिका नयद ॥ सुववी ॥ सुवडायाधिमरुमाविर्षयेन्वयातिमहायुक्ति ॥ सुयनाजिहमहाविर्षधात्वागुययद नर ॥ सुदवडगुययद
यमकुलमधुसर्व ॥ सुकायावायुसुय ॥ सुमिनायुमहाविम्वेजावननथा ॥ सुदयदुदय ॥ सुवीनीवदुसुवमहायुक्ति ॥ ननुदसर्ववडा
दयवडाहवादन ॥ सुमहासुलेमहावडावडाविविधेव ॥ सुदयविदवडावद्वयाधियसिधमिणाद ॥ सुवधनववमधुदधध

न न्यसं न न्यासयेत् सर्वे रुक्मां विनामनि विरुक्ता सर्वे दुःखदुर्वर्णने हानवजय ता विभुं ॥ १५ ॥ एतद् रुक्मवान् विनामनि वज्र १५ ॥ यद् रुक्म
वानवजयो विरुक्ता भगवत् १५ ॥ मन्त्रादीन् वज्रं तथा गतं वज्रं रावनापदागुवागवज्रं स्थानिध्यायथ तत् १५ ॥ स्ववज्रमप्यगमि विरुक्ता धर्मसुखसु
यत् १५ ॥ वज्रकायया ॥ गननि काय दैवि विरुक्ताय तत् १५ ॥ सर्वोत्तमासु पृथिवी तज्जयि हस्ति मां जठामूढे धरमनुधात्वा शर्वसमासु रुक्मवज्र १५ ॥
मिमांसासमाधि १५ ॥ यद् रुक्मवान् वज्रं यद् रुक्मवज्रं निधाय वज्रं नाम समाधि समाप्य द्धमन्त्रावज्रं रावनपदं स कायवाक्त्रिंशद् वज्रं
निधाय यत् १५ ॥ स्ववज्रमप्यगमि विरुक्ताय तत् १५ ॥ यद् रुक्मवज्रं निधाय यत् १५ ॥ यद् रुक्मवज्रं निधाय यत् १५ ॥ यद् रुक्मवज्रं निधाय यत् १५ ॥

[illegible]

विश्वरूपगवान्द्रुप्यातिथगगन ४। वज्रकामायनागहोयनामसमाधिं समापयदं सर्वयक्षिणीसमयवज्रवर्द्धकायवाक्किरुवज्रस्य
निष्पन्नयत्तु ॥ त्ववज्रधनु मधस्वचरुनष्टं ॥ १॥ ॥ नववन्दनमयं सर्वं पूज्यगन्धसमाद्रुसं ॥ त्वधनुं सर्वयक्षिणीः पविष्टुर्वी
रावयत्तु ॥ यानयति वज्रपादं न विममकी विधिनयत्तु ॥ गिरिकर्मवज्ररुदं न तस्य धनविविकयत्तु ॥ मीशवज्रसमाधिं हामुवनिजा ॥ २
धं प्रत्ययत्तु ॥ रुदये मनुयदं धात्वा वज्रपादं समावर्त्तु ॥ सर्वयक्षिणीसमयविदा न रावनाब्जानामसमाधिः ॥ अथरुगवान्द्रु
पानीरुप्यागगन ४ सर्ववद्वमनुसिद्धिविदा मुर्तवज्रनामसमाधिसमापयदं ॥ १॥ ॥ नववन्दनसिद्धिं स्वकायवाक्किरुवज्रस्य निष्पन्नयत्तु ॥

स्वकायवाक्किरुसं सिद्धावद्वयधनयत्तु ॥ १॥ ॥ नववन्दनसिद्धिं समाधिना ॥ १॥ ॥ नववन्दनसिद्धिं समाधिना ॥ १॥ ॥ नववन्दनसिद्धिं समाधिना ॥ १॥ ॥
वद्विद्याधन ४५ ॥ १॥ ॥ गगनमानिसर्ववज्रसिद्धिरूपयत्तु ॥ मनुसिद्धिनिर्वासेति वाक् ॥ १॥ ॥ यानयति मनुसिद्धिमनविर्ग ॥ १॥ ॥ यीशवनिदधननेवसाकध
नुसमन ४५ ॥ १॥ ॥ सर्वसिद्धिनां वज्रिकामधिप ४५ ॥ १॥ ॥ वज्रवाधिकयं ॥ १॥ ॥ वज्रवज्रयत्तु ॥ १॥ ॥ वज्रवज्रयत्तु ॥ १॥ ॥ वज्रवज्रयत्तु ॥ १॥ ॥
गवान्द्रुप्याधिः ॥ सर्ववज्रगगनाधिपतिः ॥ सर्ववज्रगगनकायवाक्किरुवज्रविद्यावृत्तसमादानवयोश्चकायवाक्किरुविद्यावृत्तवज्रमद्रु
दधनमिधसितवर्द्धनिर्मुद्र ४५ ॥ १॥ ॥ कावयत्तु विधिवग सर्वमनुसत्तु ॥ १॥ ॥ नववन्दनसिद्धिं समाधिना ॥ १॥ ॥ नववन्दनसिद्धिं समाधिना ॥ १॥ ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

वे ज्ञानिष्ठावयत्तु दक्षकला कर्मयथा कर्तव्यं न च ज्ञानं हीनाभिमुखि कामसर्वे समथा इयं महादुर्गं शब्दवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 वक्रमयस्वकायवाक्रिरुवज्रस्थानिष्ठा नमत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 सर्वतथागताधियानि ४ नृत्तसमयस्वकायवाक्रिरुवज्रस्थानिष्ठा नमत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 वेत्तु मयः ४ यत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 वेत्तु मयः ४ यत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४

मयस्वकायवाक्रिरुवज्रस्थानिष्ठा नमत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 कश्चिद्वज्रयाधिपते न था गताधियानि ४ सर्वतथागताधियानि ४ नृत्तसमयस्वकायवाक्रिरुवज्रस्थानिष्ठा नमत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 नमत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 वेत्तु मयः ४ यत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४
 वेत्तु मयः ४ यत्तु माहमाह दक्षय कर्मकनामिरयत्तु सर्वदुर्गं धिष्ठितुं नमत्तु कार्यवज्रयाधिपते न था गताधियानि ४

[illegible][illegible]

यनं पुंश्च वाधिसन्धयस्य कथं वक्तव्यं ॥ कायवा क्रूरसंया ॥ ने न्नाशनाप्रदात ॥ अथ वज्रपाधि ॥ सर्वं तथा गताधि
यजिष्ठं सर्वं तथा गता कायवा क्रूरवज्रस्थानिध्या यथं ॥ वज्रसंस्तुतं सर्वं कायवा क्रूरमधुनीध्यानीति वज्रयानेन भवति ॥
लुजायिनीधि ॥ अथ वज्रपाधि ॥ सर्वं तथा गताधियानि ॥ सर्वं मनु वज्रसाधनं सम्यक्सत्त्ववत् कायवा क्रूरवज्रस्थानिध्या य
यत् ॥ सत्त्ववत् सत्त्ववत् सत्त्ववत् न वज्रन भवति ॥ वज्रवत् न नागं गुं समया वज्रसंस्तुतं ॥ अथ वज्रपाधि ॥ सर्वं तथा गताधि
यानि ॥ सत्त्ववत् साधनाय साधनं सत्त्ववत् साधनं सम्यक्सत्त्ववत् कायवा क्रूरवज्रस्थानिध्या यथं ॥ वज्रवत् वज्रवत् वज्रवत्

६१

वज्र २
युक्तं विचिन्त्य तद्दशात्पुत्रवत् ॥ अथ वज्रपाधि ॥ सर्वं तथा गताधियानि ॥ सर्वं वज्रान्दीनं सम्यक्सत्त्ववत् कायवा क्रूर
रुवज्रस्थानिध्या यथं ॥ कायवा क्रूरवज्रस्थानिध्या यथं ॥ वज्रवत् वज्रवत् वज्रवत् ॥ वज्रवत् वज्रवत् वज्रवत् ॥ वज्रवत् वज्रवत् वज्रवत् ॥
लुजायिनीधि ॥ अथ वज्रपाधि ॥ सर्वं तथा गताधियानि ॥ सर्वं मनु वज्रसाधनं सम्यक्सत्त्ववत् कायवा क्रूरवज्रस्थानिध्या य
यत् ॥ सत्त्ववत् सत्त्ववत् सत्त्ववत् न वज्रन भवति ॥ वज्रवत् न नागं गुं समया वज्रसंस्तुतं ॥ अथ वज्रपाधि ॥ सर्वं तथा गताधि
यानि ॥ सत्त्ववत् साधनाय साधनं सत्त्ववत् साधनं सम्यक्सत्त्ववत् कायवा क्रूरवज्रस्थानिध्या यथं ॥ वज्रवत् वज्रवत् वज्रवत्

[illegible]

七

संग्रहमिति॥ ॥ अथ मंत्रोपमूखावाधिसत्त्वात् सर्वतथागतानेवमाह॥ माह गवन्तुः सर्वतथागतावागवजदमिथम्
समुदयनकस्ययथा॥ नक्तस्माद्धताः सर्वतथागतवज्रभाहस्ववचनितगमनूगत्रिकायां सर्वतथागतकायवाजि कृत
उधियनिधुक्तस्माद्धताः सन्निवृत्त्यामहावाधिसत्त्वा महासिद्धाहानस्यपः सर्वधर्मलक्षणस्वरावमजानन्तुः॥ अथ
विकल्पयामि॥ किमर्थं सर्वतथागुनमहावज्रात्मा सर्वतथागतधर्मवज्रसत्त्वमनस्त्रिहारायुक्ता क्रवन्निद्रिभनीति
॥ अथ हतकानः सर्वतथागनात्मावाधिसत्त्वात् सर्वतथागतधर्मवज्रसत्त्वमनस्त्रिहारायुक्ता क्रवन्निद्रिभनीति

[illegible][illegible]

कायवाक्चिह्नं ननु नृपं विस्मयते ॥ अथ वज्रधनः ॥ अस्मात् सर्ववृद्ध नमस्तु यत्तु वज्रधनं नमस्तु ॥
 १। हावमसर्वसिद्धी नो विद्या पूनरुहावना ॥ स्ववज्रधनं नमस्तु ॥ हावयद्वद्वमस्तु ॥ कायवज्रं प्रहा विहावज्रमधिष्ठु
 हावयत ॥ प्रमुखसिद्धिकायसंस्कृतं विस्मयते ननु विस्मयते नयत ॥ वज्रचक्रधनं ॥ अस्मात् सर्ववृद्ध नमस्तु ॥
 वासिदं गुह्यं विस्मयते नयत ॥ अथ वज्रधनं नमस्तु ॥ सिद्धिं लवति न चोहमा ॥ ॐ ह्यहं नमस्तु ॥ विद्या विद्या पूनरुहावना ॥
 ॥ वाक्चिह्नं नमस्तु ॥ हावयती विस्मयते नयत ॥ अवतु यत्तु नमस्तु ॥ वज्रकायसिद्धिं लवति ॥ घण्टा वयं विस्मयते

१००

स्वामहायभाः ॥ त्रिकायसिद्धिमाप्ता मिहं प्राप्ते नमस्तु ॥ अथ वज्रधनं ॥ सर्ववृद्ध नमस्तु ॥ पुन नयिकायवा
 किहवज्रसंस्कृतं नमस्तु ॥ कायवाक्चिह्नं नमस्तु ॥ हावयद्वद्वमस्तु ॥ कायवज्रं प्रहा विहावज्रमधिष्ठु
 वस्तु नमस्तु ॥ अथ वज्रधनं ॥ सर्ववृद्ध नमस्तु ॥ पुन नयिकायवा
 वाक्चिह्नं नमस्तु ॥ हावयद्वद्वमस्तु ॥ कायवज्रं प्रहा विहावज्रमधिष्ठु
 वज्रधनं ॥ सर्ववृद्ध नमस्तु ॥ पुन नयिकायवा

१०३

सर्वमथागतां॥ तथैवेपि ना मुक्कलपूजयाव कावू का रगव ना दभसूदिक् विह वन्नि॥ न वां ववू का नां रगव नां याव न॥
 कायवाङ्मिह वज्जः पूथः सुधः॥ आ काये सोक ना महु पागु विवव विनिष्ठा न॥ न ल स्य ह नाऽवाधि चिह्न ल पूजसे
 व वू का ना ला व ल म मू त्या हि ल म या व सर्व ह ह ना क व निनि॥ अथ ख लु मे तु या वाधि सत्वा मे हा सत्वा ही नः॥ स तु क ना न
 स तु क ना न॥ अथ ख लु मे तु या वाधि सत्वा मे हा सत्वा ही नः॥ स तु क ना न
 अगताः सर्वध व सिद्धि सम या ल ख न व ज भा म स मा धि स मा य या नां सर्व वा धि सत्वा ना म लु य न म्मा॥ अथ लु र व लुः सर्व

103

[illegible]

गमकायवाक्छिह्वरुजानहस्यंस्वकायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन॥ इयद्विचयपयागमस्वशुक्रादिपविग्रहेशुपूजयद्विः
 धिवत्सर्ववृद्धमधिमवाप्नुयाम॥ अथवज्रपाणिः सर्वतथागतधियमिः पूनत्रयिसर्वतथागतकायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन
 छिह्वरुजानिष्ठावयन॥ सत्त्वकायान्ननरुह्यमाज्ञासमयध्वविंती॥ कस्यचिद्वज्रसमयं सत्त्वकायमहाकुम्भः अथवज्र
 पाणिः सर्वतथागतधियमिः पूनत्रयिसर्वसाधनकसत्त्ववज्रस्वकायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन॥ कायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन
 विपुष्पास्यवज्रज॥ साधयाम्हरुहनाभायेनगुसर्वथा॥ अथवज्रपाणिः सर्वतथागतधियमिः पूनत्रयिसर्वसाधकः

१०५

वज्रसंवन्तस्वकायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन॥ विमलपुत्रमात्रमतिकल्पमूर्ध्निमसुलकल्पना॥ उक्तानमध्वगमं ध्यात्वायं चापुन
 रिदामन॥ अनेनवज्रपाणिनमजस्वीरुवमन्त्रेण॥ कायवाक्छिह्वरुसंस्मृत्यैरुवतनोपसंशयः॥ अथवज्रपाणिः सर्वतथागत
 धियमिः पूनत्रयिसर्वमसुलध्वनकायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन॥ चेत्यकर्मनकुर्वीत न चपूजकवाच
 न॥ मसुलैर्नैवकुर्वीत न शिवजायवन्दन॥ अथवज्रपाणिः सर्वतथागतधियमिः सर्वविषयविहा न क्लृप्तनाकवर्ष
 पुष्पस्वकायवाक्छिह्वरुजानिष्ठावयन॥ ॥ अनेनमध्वगमं ध्यात्वायं चापुनरिदामन॥

स्त्री न संनि रं विवज व निमि समये वी जायं गु क सं ह व ॥ अथ वज्रपाणिः सर्वतथा गताधिपतिः कायवाङ्मिह न काचक
 मनुवज संयुक्तै स्वकायवाङ्मिह वज्रपाणिनिश्च नयन ॥ उं ह ले र नि वृ २ व ध २ ह न २ द ह २ अ नृ न हं ह द सा हा ॥ अथ वज्रपाणि
 प्रचक्र कर्मवज्रपाणि विव ॥ हं काले मध्यग मं ह चाना मो ध य स मालि ख न ॥ म क्रो क न य दैः सं म्य क्ति नै का य य स दा ॥
 च वाटि सर्व म क्रो मा ति गु काल य स क्र व ॥ अथ वज्रपाणिः सर्वतथा गताधिपतिः वज्रं नयं दै स्वकायवाङ्मिह वज्र
 पाणिनिश्च नयन ॥ च वृथा ये क वृ क्त व मा ल सा न सि वा र य ॥ व जं न य दं त ह क पा य स दा म हा तै ल नू धि न वि र्ण य म स

१०४

का कं नाले न व तिं ह ला कृ म् च तु र्द म्भ म हं न प्रो व जं नं वा द अ धू धः । न प्रे वा वृ त्त ता रि म क्रि नं ह ला रि वि धा सि दि स
 व डी ला ह ल ग वा न स म न र डुः । अथ ल ग व नः सर्वतथा गताधिपतिः सर्वतथा गताधिपतिः भव मा ह ॥ क ति लि र ग वा न
 गु क क रं स म चा ग ता स्र वा धि स ला य म हा स ला य रं दं सर्वतथा गत च र्या व जं सर्वतथा गत गु क स म यै च ला स्य नि ला व
 यि धा नि च ॥ अथ वज्रपाणिः सर्वतथा गताधिपतिः मां सर्वतथा गता न व मा ह ॥ ति गु क क रं स ग व न सर्वतथा गता स म
 ध ग ता स्र वा धि स ला म हा स लाः य रं दं सर्वतथा गत वा धि च र्य वी जं गु क स्य नि ला व यि धा नि च ॥ सर्वतथा गत वा ह ॥ क

तमेकिलिः वज्रधनपाह ॥ यद्वत्सर्वतथागतकायवज्रस ॥ सर्वतथागतवज्रस ॥ सर्वतथागतवज्रस ॥ सर्वतथागतवज्रस ॥
 किलिः ॥ अथतसर्वतथागतकायवज्रस ॥ पादयानिपत्य लुप्तिस्तु मूलवज्रस ॥ अथवज्रपाणिः सर्वतथागतवज्रस ॥
 निः ॥ सर्वतथागतकायवज्रस ॥ तत्पूर्वतथागतवज्रस ॥ सर्वतथागतकायवज्रस ॥ सर्वतथागतकायवज्रस ॥
 नृपनमो नृप ॥ समा ॥ कल्याः ॥ श्रीगयावज्रस ॥ गदीयं कवस्य तथागतस्यार्हः ॥ सम्यक् बुद्धस्यानिद्रा न स्यात् ॥ अथपि
 तान् न वरिसं वृद्धस्य सावित्री ॥ तत्कस्मात्कता वरुव्या रगतवज्रः ॥ सत्त्वा अस्मिन् हातु कपदार्थस्य न नमया काले न न न स म

१०७

यनमयानसावित्री ॥ अथिदुर्गवज्रः सर्वतथागतवज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥
 पदनेकं गगनदीवा लुका स नः ॥ कल्याः ॥ पटय कया यद्वत्ता वाधिसत्त्वा वाधि नृपा प्रवृत्ति ॥ तदिह वज्रसुनिगुप्तसमा ॥
 नता वाधिसत्त्वं सर्वतथागतानां वृद्धं निसेयागच्छति ॥ तथा तमहा वाधिसत्त्वा वृद्धं दवा वज्रस ॥ यद्वत्ता पुनो दवा म
 सः ॥ अथतसर्वतथागतकायवज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥ तन्महावज्रस ॥
 तन्महा वाधिसत्त्वा सर्वतथागतानां वज्रस ॥ कथं रगतवज्रः सर्वतथागतानां वज्रस ॥ कथं रगतवज्रः सर्वतथागतानां वज्रस ॥

॥ न क स्मा क ताः अथ रुक्म रुक्म व नः सि ए का क न रुक्म व र्षः रुक्म व नः अ न मा व मि प्र व र्णे ना पि ॥ सर्व न थ ग ताः वाः
 ॥ १ ॥ सामा न्यो क न य दं रुक्म रुक्म य थ व डि न स्मा नं न थ नं न थ स्मा रि व पि सर्व न थ ग ताः ॥ सर्व व रुक्म वि स त्वे थ क न पू ज
 म ए का क ना अ सं पा म अ न रि सं व द्वा थ ॥ न क स्मा क ताः सि मृ द्वा क न वि रु द्वा क न ॥ अ थ त र्व व वि स त्वे थ क न व रुक्मि ना म र्क
 व न ॥ अ थ रुक्म व नः सर्व न थ ग ताः ॥ सर्व न थ ग ता का य वा डि रु व ज या वि रु ग प वि रु हा नः ॥ अ थ सा सर्व न थ ग ता वि रु
 द ना म म की रुक्म व नं सर्व न थ ग ता धि य नि ॥ म रु व ज ध नं उ वि व ज ध नं का म न रि रुक्म ग न न य दं ॥ पी त्या रु नू या

१०८

मा स ॥ ॥ चं व रु वि रु रु व न थ व रु रु क्म ना या य कि मा व रि म ना रु म रु थ का मेः का मा रि मां ज न क स त्व म रु
 य वं थ य दी रु जी वि रु म रु ना थ ॥ अ थ रु व रु रु व न सर्व न थ ग ता का य द पि रु रु ग व नं सर्व न थ ग ता धि य नि म रु
 व रु ध न थ रि ॥ सर्व व रु का म व रि रु रु ग न न य दं रु रु व सो म न न्य पी त्या से रु नू या मा स ॥ त्व व रु का य व रु स त्व पि यी व
 रु ॥ व रु थ व धि य न मा र्थ रि ना नू द मी ॥ मा रु न ना ग स म यां म म का म य रु य दी रु म जी वि रु म रु ना थ ॥ अ थ सा रु
 रु व न द पि रु का य व रु म ने री रु ग व नं सर्व न थ ग ता धि य नि म रु व रु ध नं का मा य रु ग म यः ॥ रु नू या मा स ॥ त्व

वज्रवाचकसकलसहितानुक्तपिनाकार्यकर्तुस्तदसंपुष्टकामाहिमांसुवतचर्यसमन्तरुदयदीदृशजीविभुमञ्जना
 था॥ अथ सा सर्वमथागतकायवाकितुसमयवज्रयितालगवन्सर्वमथागनाधिपतिमहावज्रध्वमनया सर्व
 मथागतमूखसोमनसपीत्यासंस्तनूयामासा॥ त्वं वज्रकासमयमहाहितार्थसंवृद्धवसन्निलकसमतानूकन्यीकाम १०८
 हिमांशुएविधिवद्वत्तुर्न॥ यदीदृशजीविभुमञ्जनाथा॥ अथ लगवाच जपातिस्तथागतः सर्वकामाय लगव
 जप्रियनामसमाधिसमायेनस्त्री सर्वमथागतदयितासमयवज्रधकासयमुष्मीमहता॥ अथ यं सर्वकामाय भवतु सर्व

मथागतकायवाकितुवज्रसमश्रुजधपविष्णुर्वज्रादकयविष्णुर्गुह्यकद्वयसंकितास्तथा॥ अथ सिचजाकाम
 धाभुयसत्वाप्तिकायसमयसंस्तुतास्तवजप्रियासंस्तुताः सर्वमथागतमार्त्तः समस्तैवृद्धाप्तिवज्रहानिना
 रुवना॥ ममः पुरुषि सर्वसत्त्वः समन्तरुडासमन्तरुडावृमि॥ सर्वमथागतकायवाकितुवज्रमूर्तिविष्णोस्तव
 न॥ अथ वज्रवादिः स तथागतस्तु सर्वमथागतमवेमाह॥ इष्टा लगवन्ः सर्वमथागतः सर्ववृद्धधर्मसमता॥ अथ न
 सर्वमथागतावज्रवादिस्तवमथागनाधिपतिमवमाह॥ इष्टा लगवन्ः सर्वमथागतवज्रहानसमताव

उद्गा न च र्यति॥ अथ रुग व न सर्वमथागताः सर्वमथागता विहृणुति निष्कृम्य रुग व नं मेहा वज्रपाणिं विपतिमथा
 गतमेवमाहृष्टाश्च अथ रुग व न च र्यसुगता॥ यत्र हि नागा भक्तवयदेशु वृद्धवाधिव नूग न क्यति॥ अथ वज्रपाणिः सर्वमथा
 गा विपतिः कां सर्वमथागत न वृमाह॥ मा रुग व नः सर्वमथागता च वं वेटथ॥ मत्कस्य हताः खनज समयुतु ल्यत्वां सर्व
 ममा॥ न वृषत् (अनवदनात्) (अनसंसात्) (अनसंसा वत्) (अनविह्वानत्) (अनधनु न कार्यमन नाग न द्रव्यम
 मस्य न धर्मनामं०॥ अथ न सर्वमथागता तुष्टी मरुव न॥ अथ रुग व न वज्रपाणिं सर्वमथागता चाधिसत्त्वा म

११०

अथ न स॥ अना वय नु त व नु ४ सर्वमथागताः सर्वलोकधनु र्द्विदं सर्वमथागता काय वाडिह वज्र गुप्त न च स्य हं ना
 ॥ न शावाम म द गदि कृत्स्निना वाधिस चाम हासत्वा अस्या धर्मपयां यस्या॥ अथ वज्रपाणि सर्वमथागता विपतिः वज्र न म म
 लय न स॥ उद्गा हा म वृ ल पू ग द सर्वमथागता समय न च हि सर्वमथागतां धीमथ व वज्र गजं ह्य लिखिकः॥ अथ वज्र
 म वाधिसत्त्वा महा स च व म सत्त्वा लिखित्वा तुष्टी मरुत॥ अथ न सर्वमथागता क्रित्वा स म्भुत्वा न व पूका
 य वाडिह वृषव ग या मा सः॥ अथ वैभ न न मथा गत सर्वमथागता तुक्त काय वज्रपू विह व न॥ सर्वमथागत का

मासत्वात्ताः पदकृतं नवादिना॥ ननु यववाधनायेथे सत्त्वानां हितकायया॥ अथ न सर्वं तथा गमासा अधिसत्त्वाय व
माहः साधुसाधुमहासत्त्वाः साधुसाधुगुणकनाः यत्सुगुणदत्तं ननु सर्वं पृक्तं दया॥ अथ न सर्वं महावाधिसत्त्वाः पृक्त
विनात्पुत्रलोचनाशृष्टीहसदहानप्रतिपत्यमूरुहमेशुमुक्तं ननु किमुच्यते॥ समाजं किमुच्यते॥ कीदृशं ननु संवे
ल्यारगत्वं न किमुच्यते॥ नत्वं कतिविधेषां कृणुष्व कतिविधं तथा॥ बहस्यं किमुच्यते यवमकतिविधं पुत्रं॥ वाधिविह
निकिं ह्येविद्यापूवृषति किं तथा॥ वज्रधुगिति किं ह्ययं जिगिति किं तथा॥ वज्रधुगिति किं ननु आनागिति किं तथा॥

प्रसाधुगिति किं ह्ययं त्रिमित्युक्तिरुक्ता॥ माहति किमुच्यते॥ अथ न किमुच्यते॥ नागमिति किमुच्यते वज्रमनु किमुच्यते॥
अतीत्युक्तिमुच्यते तथा स्यादिति स्मृतं यथा न ह्यन किमर्थं न किं नृत्तं न ह्यतथा॥ पद्मा न ह्यन कथं नामा कथं विप्रानक
नथा॥ सर्वमनुचयति किं ह्ययं ननु चर्यति किं तथा॥ जयमित्युक्तिं ह्ययं किमा नृदयमुच्यते॥ धर्मदयं कथं लायं सन्न
किदंतथा॥ इत्यमोहमहाभागः सत्त्वाजां वृत्तं कथां यमुत्ता न किमुच्यते नृदयं सकथं नृत्तं॥ पूषमित्युक्तिं ह्ययं
येन किमुच्यते॥ काननं वृत्तं कथं ह्ययं यमनु किमुच्यते॥ वादनं वृत्तं कथां॥ पुमं वृत्तं ह्ययं॥ अथ न कथं मया

993

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ सर्वमहावाधिसत्त्वास्त्वां सर्वमथागतानामनृपहवचनं संप्रवृत्तमहावाधिसत्त्वा
स्यमहावज्रधनस्यकायवाक्किं तु वज्रं स्वकायवाक्किं तु वज्रं शालं वा ॥ साधुदं रगव नः साधुना धूसरगता ०० नि ॥ तु ह्येव
रुत न ॥ न नः स सर्वमथागतानामहाक वृक्षस्य शालं वाधिसत्त्वा ॥ न वां महावाधिसत्त्वा नामक कुरुते वताना ये अनि निदध
निस्मा विविधकायवाक्किं तु पुंसु मित्यजिगीयमममाजं मीत्वं नं अहं सर्ववृद्धा लिधनका ॥ पश्चात्तत्रैव सत्तैव दशम
पश्येद्यत्तं वृद्धानां वाधिसत्त्वा नां दशना साधनं महत् ॥ चतुर्थं विदधं वैव शृणुमहादश नथा ॥ शालार्थकर्मसामान्यसि

हिंसा वृत्तसत्त्ववां॥ अष्टमं च विनीय वेव दधीक वेव दधयं च बहु र्दं॥ १० म नू ना ग मं वे व उ व सा ध न स स वं॥ स
 क म स र उ यं च द (लोका द न यं च मं सिद्धि कृ य नि मि तं च स वा सा ध न सं व वं॥ सर्वे तथा ग न क र्म नि गृ ह नू गृ द न र्म॥
 दानं दो दानं सो म्या नां स सा ना व म कृ द धा॥ उ स्य हि कृ म स म्भं स वा व ज वि धि य कृ ॥ सामा न्य सिद्धि स म्भं गृ ष्म मूः
 रु म म व ना॥ य म्भु रं वृ न सं वं धं गृ ष्म मा चार्य सं प दं॥ पु रू षा म कृ मा ग म सि ध्या म्भ य नि पा च नं॥ स वृ न स्या ति ध्व क स्य
 सु मि ष्य म्भ म ह स न ॥ कृ षा नां वा धि स त्वा नां द न ना य नि मा च ना॥ पु रू षा य स मा य ति य ग ०० स रि धी य न॥

११४

या निः स त्वा व ना पु रू षा उ पा या ला व ल कृ षां॥ पु व च लु कृ य पु व च नि क र त म॥ आ धा वः पु रू षा नि (ये व अ सं हा र्य पु रू
 द नूः पु रू षा नि ष्म कृ नि रु रु व र्म हा र्यः दू लं म थ॥ आ धा व नू उ पा य म्भ रि ति रु कृ थ र्म गृ ह॥ यं च कं रि कृ लं चै व स र
 वे कं म र्म कृ लं॥ स हा कि वो धि व ज स्य सो रु न न कृ मि षा म॥ न ल यं च कृ ल य कं रि कृ लं पु रू षा न च न॥ अ धि दू वा म ह यं च
 य व मं हा म धा कृ लं॥ अ ना दि ध नं म नू कृ कृ ला व य वि रु म थ॥ अ न ना क वृ म रि त्र वो धि ति रु म मि स्म म॥ का य वा वि
 रु व रु म अ न श ला व नः॥ वि श या स ह स य कृ वि श य पू रू ष उ च न॥ यं च रु मि ष्म व नि ष्म व ज मि ष्य रि धी य न॥ धा व न ध गि

[illegible]

साधकिलक्षणां॥ संस्तुतु सदा ॐ स्वाध्यायनीत्युधत्तनितात्मनां॥ स्वरावधिविहंतु सर्वं कुरु सर्वं कुरु॥ कामं विहृमिनि
 प्राक्तं नागद्वयमनाहृतिना॥ समयविषयसंकाशं काशमस्ति मूलं कर्मजं दुःखं॥ अथ यत्नानधर्मस्य अहंकाराभाहृत्यानां अथ
 न्यस्तानां ननु द्वयं ॐ त्वत्तिथीयमं॥ लक्षणां नागनासक्तिः॥ लानां यवजमुच्यते॥ नतिवत्पुनस्तथा गमं वदः॥ नि मूलं य
 वं॥ माहृद्वयमथ नागसदा वज्रवति स्तिना॥ उपायस्तनूद्वानां वज्रपात्रमिहिस्युतः॥ अविनाशनात्मकाधर्माश्च न
 त्यादस्वरावतः॥ समयं सर्वं लानां भवेत्तद्वत्तु यमः॥ अविहं नात्मकाधर्माप्यवमार्याविशुद्धिः॥ समयं सर्वं विहं नां

[illegible]

कृदिनिस्तु नं॥ कृमवतावनेपुनः सर्वकर्मविपुधन॥ सर्वकर्मविपुधनविपुधनमजदू नं॥ ग्रहसंज्ञागशतत्राकारानिस्तु नं॥
 नथ॥ हस्तचक्रलक्ष्मिचक्रादिष्टुः समुद्रवशाठर्किं राजदयः वक्राः काधुद्रावृत्तिविपुधनाः समयः वक्रादयः वक्राः वृ
 थिद्यादिष्टुपंचकाः कृमलो निकावित्यानादिशा गजनिविपुधनाः वृयवक्रादयः वक्राः वक्राधियानि विनिस्तुनाः चिरं नकायवा गव
 उः संरुवनिमहात्मना॥ प्रह्लादायाद्रवंस्तुधुधयननूविग्रहं॥ निधित्ययागता मलीनिषा नक्रमयागतः सर्वपुष्टाधिमा
 क्रमसर्वसत्तासवर्जितं॥ सिंहवद्विचयन्मजी निर्विषयं नवनंता॥ नाकायंविशमजगुना रुद्रचिश्चयनमथा॥ नावाच्यंविशम

किं निना विंशतिं विद्यते सदा ॥ अस्मादिह न आगन्नि स भव स माहि नः ॥ सर्वं चित् पूया चर्य स मनु चर्य पूकथन ॥ उनीया त्या
 यमं यं यं दिशे म नः ॥ तस्मै नै म न नं त्या त तं का न श नार्थ नः ॥ लोका ल वि निर्मू कं य दू कं स म य स म वं ॥ पाल नं स व ज सु म
 कु चर्य शि क थ न ॥ स्व कं स्व र्यं स ल व न वि चर्य म न सा ह दि ॥ ज य मु म ह स रं व म नु मू चर्य र द नः ॥ वि चर्य ज्ञा न्म का व द्वां ह
 नं ती ज न स रं व न ॥ बा धि नै म ल्प वी ज न नि ना सा धा न य कु ती ॥ दू र्ध्व वि स वि चर्य ध्व वी ज न नं ज य न ॥ ज यं न ल्य न मा त्या
 नं सर्व दामं न मू च न ॥ म नु म नु मि ति प्रा क्तं न न द न ला व दं ॥ यथ व य धि क्ता नं स मा धि नार्थे व सा नं पा मू च रि य कं

११७

च न थ दू र्जां च सर्व न र वि द्य न वि द्य न श मं य स व र द व स्य न ॥ न स ल ग म दू र्ध्व याः सा धि क्ता ना दि नि स थ ॥ वी ना स म
 क र जा स भ के कं मू र्ध्व पा व नं ॥ तं मू द्वा म नु मा ग न मू य न क ल ज मं ॥ दू र्ध्व न रं तु मा मू य दू र्ध्व मा मू य रं न ना ॥ वि स ल्य म न
 आ सि धिः क ल्य का टि न जा य न ॥ च तु र्ग ग स मा यू कं वि द्या पू नू च व जि टा ॥ का य न डि ह न द न रि का ह प्र वि ता व रं ॥ द म ल
 व का ना पी न न म धा रं वि ता व रं ॥ सर्वं च दू र्ध्व का धा नू द न ह ना स का द या ना ॥ स व य नि व ना ध च कं ह नि षा न ना पु
 नू पि ना ॥ व ज का ला स्या व य रं न नु नि ध न प मं ॥ ॐ नि ध नं द य द्वा नं प्र कृ त्वा नि र्म ल मि तं ॥ रा वि म न न न नै व

॥ ब्रह्मचर्यं ज्ञायते ॥ कर्मद्वयं समाहृत्य वजी जं न रुदरा जं ॥ कर्ममात्रं हि कं चैव कर्म मोक्षवकथं सि विन पद्विधं सम
यस्य च न था ॥ सर्वं न हि कुरुं शर्वं विघ्नं कुमलं दनः ॥ नृपण क्यटयः कामोः सुखं द्रव्यं रुयात्मकाः ॥ जनयन्ति कुरुद्वयं नि
लं नागद्वयं माहयं ॥ नागनागमयं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ नत्तव जायत समयं कामाक्षी स मया प माः ॥ लका नं च नि
माका लं सर्वं गन्धकनात्मकं ॥ कनकं हनयं चैव लालं कुर्यात्स्वजायतः ॥ प्रवर्द्धं च न माहं च विष्णुश्च कुव न पुयं ॥ आ मू
जा मू मू स मू छिः मथं कूर्वं निव जि हः ॥ निष्ठा यद्वयं च कुरुद्वयं यथा गनय गिनाः विघो ल्य कुरुव व जं हं संह वं लानव

जिह्वा ॥ मनुसंस्कार्यकामनतुह्यं ह वक्ष्यते ॥ अथ स्याम नवदुखवज्रं स्वयं रुच्यते ॥ मानसं जीवन्ते वदुःखदुःखम्
सर्वतः ॥ कश्चिन्मिच्छामात्रं वक्ष्यते न संशयः ॥ निष्ठाया माहवक्ष्यते माहयागनयागिना ॥ लक्षणाया निष्ठाया किं विदुः सर्व
त्रयि सत्यम् ॥ माहविदुः किं विदुः सर्वतः ॥ प्रवृत्तिः ॥ दानपुवर्ष्यपुवर्ष्यनसर्वेषां माहवक्ष्यते ॥ प्रदानं ह न सत्यं
सर्वदुःखमसत्यम् ॥ कश्चिन्मिच्छामात्रं वक्ष्यते न संशयः ॥ निष्ठाया माहवक्ष्यते माहयागनयागिना ॥ अथ ह न सर्वदुःखम्
कान्तं यन्मात्रं सत्यम् ॥ वनिष्ठाया निष्ठाया ह सर्वतः ॥ माहविदुः किं विदुः सर्वतः ॥ प्रदानं ह न सत्यं
सर्वदुःखमसत्यम् ॥ कश्चिन्मिच्छामात्रं वक्ष्यते न संशयः ॥ निष्ठाया माहवक्ष्यते माहयागनयागिना ॥ अथ ह न सर्वदुःखम्

स्यो मा लार्था देवा सुना वयि॥ कामय निद्रा (रा) रो व मा नूष किं पू नः॥ सुयं कं व कर्मा य प्रभा गति वा नूषा न मं विद्या न सिद्धा नं गः॥
मि न न्यथा॥ रग म सु ल मा त्वा उ म धि वि लं व म सु लं॥ मि लु कं डि पू म सु ल क ल्य ना मू दि तं मू ड या सर्व लं स म त न धा तु ना
॥ न न पू डा सदा न्य सा म सु ल वि वि नि दि र्ग न॥ मू क नं द द मू लं व र व प्र का ष पू वि ल्य स न॥ ट कि द मू व ल म्वा व च १२५
कु लं र म (ध) दि तं॥ वि श्या ना जा न व मा धा मू डा वे द्ध कु व र्ति ना॥ पृ थि व्या दि पू स त्वा नां मू डा मे धु ल क म्ब कं॥ मू द न
वी न सं धी व पृ थि वी च य द न्म था॥ ध र्मे द य मू डा वे ष ढ जा धि य मि व रि षा॥ व र्क श्र वा धि स त्वां शु क्री क्ष ना जा रि मू ड

दि ताः॥ न मू न्या ल क वी वा लु क लं व र्धु न क ल्यि तः॥ पू षा मि ल्य रि धी य न न व या धि त धा त वः॥ का य वा क ल न न्या सं व
र्या न्म ल्य मे गा वे ल्य व र्ध नां मू ल य ल्क न मू च न॥ ल न स ल्य न य म पू ष ह न न क मि ति म्म नं गा वी जा न व य दं षा क
मि व जा क व म क नं॥ मू द नं वा ध नं प क का य वा कि ल म र वः॥ पु न धं न मि स स नं द न दि ल्य क धा तु पू॥ न्म ल क ह स व
जी धां सर्व व र्ध नि म लु ना॥ व मि नां सर्व व र्ध नां सर्व व र्ध नि म ल्य द॥ स र्ग ल्य पि तु नू प ध व र्ध न श्र म च न॥ का य वा क
वि लु व र्ध ना का य वा कि ल म सु ल॥ मू य का य वा कि लं क ल्य स य न ल व म सु लं॥ मू रि व कं रि षा लं द म मि न न लु

ॐ कल्पितं॥ कल्पना लिखक पुथम मां हरी यं पुष्पा लिखक नः॥ प्रह्लादा नंदन यं वचन उर्थ न प्र न तथा॥ मन्त्र याग विष्णु लात्री
मृष्यां पुष्प सं रुवां॥ पुष्प पुष्पा लिखकं वदया विष्णु स मे ति शः॥ स्वधा तु मध्यग मं हत्वा विष्णु म का जा सं युतां॥ वज्र प प्रय
ग न सर्व व जा स मा ज्ञ य न॥ सुवा कां हृदय पा लका य का क्षि हु व ज नः॥ उ स्य व ज ना रा न सि प्र व क्ति नि या न य न॥ ॐ दं न स १२०
व व जा क्षी म लि ख कं व दै य न॥ सिद्धि नि सर्व म लु लि क मी गु व स ना वि वा॥ श्री भु व्वा म रा षा ह्वा स नू या सा ध के प्र यो॥ उ क
या ग जि या स्य ना स म यी स म य स्य थो॥ द धि कि भ य पु दा न न्या गु न व सा ध क न धो॥ श्रु वि षा गु नू मा न स्य दा न न्या सा ध

क स्य न॥ मृध मा हा स्य कं या गं मा ह न तां स म चि तं॥ निःषका न्ना ह्वा ना लि मा ह व ज स्व यं रु व न॥ द्वि पं ह्वा स कं या गं ह्वा
ष न त्या स म चि तं॥ निःषका रु व ध ना लि ह्वा स व जः स्व यं रु व न॥ न त्ने ना ग स्य कं या गं ना गे न त्या स म चि तं॥ निःषका
डा ग ध ना लि ना ग व जः स्व यं रु व न॥ उ ह्वा हा ना स्य कं या गं व ज न त्या स म चि तं॥ निःषका रु व ध ना लिः प्र ह्वा ह्वा न स्व यं
रु व न॥ ना म व दै व नी दि या गु ष्ठा लि ख क स्य व जि शः॥ या म या मि पु दा न य सा श्री कृ ष्ण न थ ग ता न॥ रु रु द त्वा नि व तिः
थ मृ ये न गु वृ व जि ता॥ ना न्या या य न वृ ह त्वा न स्मा द्वि या मि मां व नां॥ श्रु क या सर्व ध र्मा त्व त्व ये रा वे न ल क्रि ता धा

न सा हि विद्या संसाधनकार्यरुवता सदा ॥ ॐ द न सर्ववृक्षा नां विद्या व न म नृ सु यां ॥ अत्रि क म न्रि या मू टः सिद्धि स म्
 न वा लु मां ॥ उ ह सा द रु ध र्म पु ला ज न म ल य क र्मा ॥ यं वा ह न रं व धि ष्ठा ना स्यं वा मृ न मि ति स्मृ तं ॥ वा न न म्ना र नं स वा
 या न न रू प द र्श नां ॥ म लु मू र्ति पु या ॥ ग न रु द रं स्यं वा मृ ना मृ तं ॥ अ न नी क ग नं चि न्द ज क्का व स र वं ॥ उं का नां किं ॥ १२१
 ना न्य म्ना नि न रु म ध्वा नि वे न य न ॥ व न य न स म या या ग म्ना ल्य स न य या गि ना ॥ उ या स्य म्ना टिका का व ह न स र य
 मि वा य वं ॥ आ कृ ष्य य व मा नु श ट मे दि ॥ ल्मा क वा पु र ॥ अ मृ न रु न स या ल्य रु द र य रु न या ग न ॥ यं व री यं न थ रु

न सा ध्य सिद्धि वि ध न नः ॥ नि षा य स्य न ने वी जं व न्य था न व सिद्धि दाः ॥ अ न र्थ ना द य सि द्धाः ॥ सा मा न्या ॐ नि की र्ति
 नाः ॥ सिद्धि नृ लु म मि त्या कृ वृ षा वृ ष ल सा ध नं ॥ व रु वि ध म्ना य रु वा धि व रु ज र व मि र्मं ॥ या ग न रु व स न्या न या गि नां या गि
 नी स दा ॥ स वा धि ध नं प्र थ मं दि नी य मू प सा ध नं ॥ सा ध न रु ह नी यं वे म हा सा ध न व रु थ र्मं ॥ सा मा न्या रु म रु द न स वा यः
 रु वि धं रु व न ॥ व रु व रु षा ॥ स मा न्य म्ना रु म रु ह ना मृ न न वा प्र थ मं रु न्य ना वा धिं दि नी यं वी ज सं रु नं ॥ रु नी यं वि ष नि षा
 रु थ रु थं न्या स म न नं ॥ उ रि व रु व रु षा ॥ स मा न्य म्ना रु म ॥ रु ना मृ न ने व रु या र्थ या ग न ष द रु नः ॥ स वा रु

उद्गते येन ह्यसाधनमृतुमं॥ साधयद्यथा नेव जाय न सिद्धि न लभामा॥ अथाह न कथमध्या न शाखा या मा रथ मवसा॥ अत्र
 स्मृति समाधि ध्वषुं गम गेय च न॥ दत्ता नमि निद्रा नैव संवृति सं न सर्वतः॥ अथाह नमि निद्रा क्रमा माह नं पुति पुः
 तिः॥ पंचका माः समा स न पंच वृक्ष प्रयोग नः॥ कल्य नध्या नमृ च न नध्या न जा वाह व न॥ विन वं व विवा नं व पीति नैव सख
 नथामा॥ विहस्य का गुता नैव पंच न ध्या न संग्रहाः॥ गुह्य न कुपू सर्व व विविधाः यनिको र्मिनाः॥ गुह्य न या दय न क विवा न न
 स्य योग न॥ हरी यं पीति सं का नं व रु थं मूव सं ग्रहं॥ स्व विहं पंच मं ह्यं हान ह्यं या दया क्र नं॥ सर्व वृक्ष म यमा नं सर्व

१२२

काम धनि विनां पंच वृक्ष नम यं ध्या सं पंच रुत सखा व कं॥ निधाय पि तु वृथ न नासिका गु न कल्य य न्मा॥ पंच वं धूम हान न
 शाखा या नमि निद्रा मा॥ सम तु ह दया ध्या ला शा सं वि रु ग मय सा॥ निनु धं व रु य न तं वा न य वा न मं स्पृ नं॥ नि ना ध
 व ज ग नं विह निमि रु रु का य ता॥ पंच धा नं निमि रु रु वा धि व ज स ला धि नं॥ अथ मं म नी चिका का नं धू वा का नं द्वि ती य कं॥
 या न का का न व व रु थं द्वि ती य व रु ला॥ पंच व रु सदा लोकं नि व रु ग व न स त्रि रुं॥ स्ति न तु व ज मा र्ग प ह्य ल सी म ख धा तुषु
 वि ता य य द न स्मृ ता त दा का न तु स रु ले न॥ अ न स्मृ ति वि हा यं पीति ला स नं य जा य न॥ अ ह्य या य समा प र्णा सर्व

कवा समासः॥ संक्षयिषु यागानमस्मिन्धवितावनं॥ वाटिनिहाननिष्पत्तिस्माधिविनिर्जितः॥ प्रसादावतः
 सासायसर्वमकुत्रधिसुत॥ आनकानतमापययंवातिहमवापुयात॥ प्रसायाभननियमंवाधिसत्वेर्निनीकन॥ ध
 नमा नवनात्रिस्तुतसत्त्वसमाधिसुत॥ अनुस्मृतिस्मायागत्पुलासेयुलंजायन॥ समाधिविनिर्जितमातुनिगववस
 वांलवत॥ नात्रिस्तुदरीतकचनुवजुपयागन॥ शकृष्टपनमातुसतिहमकुमयीकन॥ मकुमृतिपुयागन
 वाधिसाधामुदाहनेन॥ स्वमभुसमाहृताधिसंयागत्पुलावन॥ तद्विहंस्तनविस्मिनलावनमृपसाधन॥ दर्वनचदि

१२३

वायावनपूर्वसक्तुदमासलावनं॥ सर्वतामायलोरोकु कलुवांसर्वतः सदा॥ दनंयदिषदमासेयदकंनेवजायत॥ वाव
 मकुमिवावेयाधकविधिसंवने॥ दनंनकुमयावंसाधकस्यनजायन॥ यदानसिद्धमवाधिः ह० यागनसाधयन॥
 हानसिद्धकुरुत्वाटवस्यनवापजनेया॥ कलुलंदपुयागन वजकीलनकीलयन॥ वगीकनसननायुननः कुर्यात्पुयाग
 न॥ महानागनस्यनेव संक्षयस्तुनवजिसा॥ याविकां सूर्यनवभासाधमाविगुहंयेसम॥ यत्रिवर्तननुमृदामभुलकु
 कल्ययन॥ आसमधगनंस्तुसंक्षयसर्ववजिसा॥ सर्ववजमयकलातदावाधिसि लावयन॥ वकुलि॥ अदनागीमय

श्रीरक्षितं हृदि ॥ अथ वज्रमयं चिह्नं नवद्वारं लावणं मदनं शिखरं वरुणं न सुहृदयं न धाम ॥ सहस्रं न रितं कनः
 द्रुमाधनं सदनः ॥ मनुजं शिखरं मे विद्यापिधर्ममुद्रया ॥ यद्वद्वर्तिनो राजा उद्दिष्टं निचिनिः शृताः विद्यानाहं
 निविद्यानाचतुर्लोकमहर्षिकाः ॥ सर्वज्ञानं विद्यामावजाधियमि यत्तथा ॥ अथ वज्रं सर्वज्ञानं मलिखं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अ
 नेन विविधा गुरुज्ञानं सततं विग्रहं ॥ कायवाक्चित्तवज्रं मन्त्रपीकं न ह्यसाधनं ॥ पूर्वाज्ञानं साधनं विद्यापूज्यं वज्रं ॥ अ
 त्त्वस्य सुलं मृष्टं महासाधनं नृपते ॥ महाकालं महाश्रीं विष्णुं महालोकं योगिनः ॥ उपसाधनं कालं विष्णुं नृपते

१२४

क्रमुनि ॥ साधनं स्वदेवता योगं कुर्यात् सक्तं विष्णुं नृपते ॥ महासाधनं कालं विष्णुं वज्रं विष्णुं ॥ ॐ दत्तं सर्ववृक्षाणां नृप
 तं यं नमो योगिनां ॥ ॐ निवृद्धा विद्या गुरुसाधनं सिद्धिं नृपते ॥ अथ येन सर्वं सिद्धिं जायते उक्तं मंत्रिणा ॥ कल्पकाटि स
 हस्रं विवृद्धा नमो योगिनां ॥ साधनं साधनं साधनं साधनं साधनं साधनं ॥ वज्रं यमस्य गुरुसाधनं नृपते ॥ साधनं
 बालं नृपते कुरुदत्तं नमो योगिनां ॥ सत्तावंतं मूर्खतां महासाधनं नृपते ॥ सर्ववृद्धा विष्णुः श्रीमान् महावज्रधरः पदः ॥ उ
 पयः सर्ववृद्धा नमो योगिनां ॥ येन कर्म नृपते योगमालं योगिनां ॥ निष्ठा यमं लुप्तं वयं समया

नमः॥ समग्रं न क्रयत्यवकायवाक्किलवजिहः॥ अथवीष्टीय समग्रं (थि) वि सं रथ॥ तत्त्वकमानुनूययस्ववजाह्वनदीयः॥
 न॥ साध्यापियद्वहमयुलनविलावयन॥ अथनधंभवयहस्यनवांदहसुवजिह॥ नमद्यसनायाजीपुष्पास्वरावयन॥ अथ
 य सर्वरावनसन्नकनापुवमयन॥ हलापेतिहति न स्यय (थ) कंडव्यसंरावे॥ लिंगमाकुम्यपादनाकाधविष्टनचेनेसा॥
 काधनानाहीतग (हो) वनप्रवयद्यो ननाथायसाध्यासाधकवजिहः॥ वधि नकुटितं ननजाधमाऊनवधि न॥ संनकना
 ससंरुतंसाध्यासाधकयहमः॥ यानयन्युतिहनीतस्य शिवजस्यनमक्ति नः॥ कील्यनकीलमकुनमूध्रिक (गुन) थाहदि

१२५

नमः॥ (थां) यपदवा नागना विषयमकुवान्॥ निपातस्य ननविन्धयूतं वामपिस्वकीलयन॥ न सर्वपुया (ग) नय (थ) कविधि
 संताव (हो)॥ यकुमकुपुयागीनयजयत्कर्मरुदन॥ जपत्वा लिंगमाकुम्यसामवाजाधमगुं ल॥ ध्यानं वाकुरसत्वे कुत्वा य
 मानं प्रकल्पयत॥ लानिकं भावे विरुक्तुशक्तिं पूष्टिमानं स॥ वस्य नकुमनः हलाजाधकनां प्रसाधयत॥ अथरुगवनन
 सर्वतथागुनाः नेवां वाधिसत्त्वा नां महासत्त्वा नी संसयकंदहत्वा सर्वसंगयकुत्वा नं कायवाक्किलवज्जं॥ स्वकायवाक्किलव
 जं विरुवनं स्वकायवाक्किलना॥ ध्यायन् च कुलीमवस्तिना ररुवन॥ अनेथे सर्ववाधिसत्त्वा महासत्त्वा स्तां सर्वतथाः

न॥ महासाधनममत्रिनिधुलसाधकः॥ मांवाधिवज्रं वल्लभसदानमामः॥ यस्तनिकनसवाचतुवज्रं ननहिमांयदिवि
 विधानिहोहीनः सिद्धाः॥ अविनष्टमार्गं पूवदुपुसादे॥ मांवाधिवज्रं मल्लसदानमामः॥ भृग्विक्रियं मूसमाजगुन
 उद्युतस्वाध्या॥ कनकिचप० निविनयनिष्ठजां कनातिलिखनिवअखयनि॥ मांवाधिवज्रं वल्लभसदानमामः॥ स्वा
 ध्यायं० पूअहियुक्तसाधकः॥ आंयादिकर्मप्रसभसुकलियनन॥ यकुं वमकुविहिमननथमूडिनन॥ मांवाधिव
 ज्रं वल्लभसदानमामः॥ यदर्शयनिवएभनिवसंस्ववनि॥ अष्टमिसाधकविराः॥ खलूनाममातुं॥ प्रकांकनाः॥

१२८

निववगनिचउकदं॥ मांवाधिवज्रं वल्लभसदानमामः॥ उल्लिखतुपदेः॥ अनेसुनूयासर्वनायकाना॥ अनूमादय
 किंननाथावधिसत्त्वामहमहा॥ सुखायितमिदंरुं सर्वतथाधियंयनां॥ सर्वतथागतं गुं समाजं गुं संलवेमिति॥
 ०००॥ दमूलां सर्वतथागतं वधिसत्त्वामहसत्वाः॥ स्वकायवाक्किहृपूविहननकायवाक्किहृस्यकायवाक्किहृ स्वका
 यवाक्किहृनाथां लंयहृमहवत्रिनि॥ ॥ सर्वतथागतकोयवाक्किहृनहस्मादुगुं समाजं सर्वगुं नि
 दि॥ अवजहनाधिष्ठानां नामपटलाद्यादमसमाफः॥ ॥ यधर्माहृपूहृवाहृपूक्यां तथागतः॥ आदि॥

धन आगत गुणवासदूषीवजाचार्यशिषुवनरुदनपलांगुसद्वसिहमरुतागुसिहयानाशलागुरुभा॥

१२५

DH291 धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार



